



स्थापना : 1918

हिन्दी प्रचार समाचार



सभा के संस्थापक : महात्मा गांधी

वर्ष : 87, अंक : 8
अगस्त 2023

वार्षिक चंदा : ₹ 100/-
एक प्रति का मूल्य : ₹ 8/-



दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद में
केंद्र सभा के कार्यकारिणी समिति की बैठक : 29.07.2023



हिन्दी प्रचार समाचार

(राष्ट्रीय महत्व की संस्था, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का मुख पत्र)

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

(संसदीय अधिनियम 14 सन् 1964 द्वारा घोषित राष्ट्रीय महत्व की संस्था)

वर्ष : 87 अंक : 8

अगस्त 2023



संपादक

जी. सेल्वराजन

सह संपादक

डॉ. जी. नीरजा

neerajagurramkonda@gmail.com

प्रमाणित प्रचारक चंदा

₹ : 100/-

संपादकीय कार्यालय

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

टी. नगर, चेन्नै - 600 017

संपर्क सूत्र : 044 - 24341824

044 - 24348640

Website : dbhpscentral.org

You Tube Channel :

DBHPS, Central Sabha Chennai

Email : dbhpsahithyach17@gmail.com

संपादकीय

♦ भारत के स्वतंत्रता संग्राम में तमिलनाडु का योगदान 4

धरोहर

♦ भारत के सपने पं. जवाहर लाल नेहरू 07
♦ महात्मा गांधी : उनकी हिंदुस्तानी... डॉ. मोटूरि सत्यनारायण 08
♦ जेल में आती तुम्हारी याद शिवमंगल सिंह सुमन 11
♦ सरस्वती का प्रकाशन राहुल सांकृत्यायन 23

लोक संस्कृति

♦ करगाट्टम 18
♦ लोकोक्तियाँ/अभिव्यक्तियाँ 24

आलेख

♦ पारिभाषिक शब्दावली संबंधी... डॉ. एस. एल. कुमारी 19

कविता

♦ ओ मेरे प्यारे मन! एस. राजेश्वरी 30

कहानी

♦ आत्मविश्वास आर. जयलक्ष्मी 25
♦ एक शब्द (लघुकथा) ज्योति स्पर्श 20

मीडिया

♦ पत्रकारिता की चुनौतियाँ ईश्वरी ए. 12

अनुवाद

♦ रसोईघर... अलमेलु कृष्णन 14
♦ रास्ता परिमेड की ओर बी.के.बालकृष्णन नायर 21

विविधा

♦ माँ का आशीर्वाद डॉ. दिलीप धींग 26
♦ स्वास्थ्य ही सबसे बड़ी पूँजी है राजेंद्र भाटिया 28
♦ योग और हम आर.जे.वैशाली गुप्ता 31

भाषा विज्ञान

♦ संप्रेषण : समस्या और समाधान विद्यानिवास मिश्र 32

परीक्षोपयोगी

♦ सभ्यता का रहस्य एच. कांतिमति 27
♦ परीक्षा समय सारणी 34
♦ पाठ्य पुस्तक सूची 36
बूझो तो जानो 31

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों का पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में तमिलनाडु का योगदान

घर आँगन सब आग लग रही,
सुलग रहे वन-उपवन,
दर-दीवारें चटख रही हैं
जलते छप्पन-छाजन
दूर बैठ कर ताप रहा है, आग लगाने वाला,
मेरा देश जल रहा, कोई नहीं बुझाने वाला। (शिवमंगल सिंह 'सुमन')

1857 के प्रथम भारतीय स्वाधीनता संग्राम को अंग्रेजों ने दबा दिया था। अंग्रेज भले ही इस षड्यंत्र में सफल हुए, लेकिन त्रस्त भारतीय जन मानस में असंतोष की चिंगारी तो सुलग ही चुकी थी। इस विद्रोह के बाद भारत में स्थितियाँ बदलने लगीं। यही वह समय था जब औद्योगिक क्रांति के कारण सामंतशाही व्यवस्था का नाश हो रहा था और मध्य वर्ग का उदय होने लगा था। यही वर्ग पूरे समाज का नेतृत्व कर रहा था। धीरे धीरे पुनर्जागरण की लहर पूरे भारत में फैल गई। महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वाधीनता आंदोलन जोर पकड़ने लगा और अंततः 1947 में भारत आजाद हुआ।

स्वतंत्रता संग्राम में भारत के सभी क्षेत्रों का अतुलनीय योगदान रहा है। लेकिन यह भी निर्विवाद सत्य है कि 1857 से पहले ही तमिलनाडु में स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल बज चुका था। स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में तमिलनाडु का नाम लेते ही वीरपांड्य कट्टबोम्मन, कातप्प पुलितेवन, अलगुमुत्तू, वेलुतम्पी, ऊमैत्तुरै, मरुदु भाई, सुंदरलिंगम, चित्रमलै, चिदंबरम पिल्लै, तिरुप्पूर कुमरन, सुब्रह्मण्य भारती आदि के नाम अनायास ही स्मरण हो आते हैं। इन लोगों ने अंग्रेजों के शासन का खुलकर विरोध किया। कट्टबोम्मन ने अंग्रेजी सरकार को कर देने से इनकार किया। उनका कहना था कि, जब प्रकृति से हमें सब चीजें प्राप्त होती हैं, तो फिर विदेशी शासकों को कर क्यों दे? वे इस बात पर बल देते थे कि स्वतंत्रता हर एक नागरिक का जन्मसिद्ध अधिकार है। उसके छीने जाने पर व्यक्ति का जीना और मरना निरर्थक है। उन्होंने अंग्रेज सरकार की नाक में दम कर दिया, तो 1799 में उन्हें घोखे से गिरफ्तार करके फाँसी पर लटका दिया गया। ग्रामीण जनता के बीच उनके पराक्रम से संबंधित अनेक कथाएँ और लोक गीत प्रचलित हैं। उदाहरण के लिए 'देवाराट्टम' तमिलनाडु का लोक नृत्य है जो करूर जिले के थोटियापट्टी में वीरपांड्य कट्टबोम्मन राजवंश के वंशजों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। यह आज भी संरक्षित है। 'देवार' का अर्थ है राजा तथा 'आट्टम' का अर्थ है नृत्य। विशेष रूप से पांड्य राजवंश में सफल युद्ध के बाद राजाओं और योद्धाओं द्वारा इस नृत्य का प्रदर्शन किया जाता था। बाद में मारवाड़ कबीले के मुक्कुलाथोर समूह के लोग इस नृत्य का प्रदर्शन करने लगे, जिन्हें वर्तमान मद्रुरै में देवार के रूप में माना जाता है और यह किंवदंती प्रचलित है कि वे पांड्य राजवंश से संबंधित लोग हैं। इस लोक नृत्य के गीत का हिंदी अनुवाद उदाहरणस्वरूप यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है-

‘आती है सेना लेकर हाथी और ऊँट
उससे आगे बाजे, सींग वादन की गूँज
राजा कट्टबोम्मन आता है गंभीर
देखो री माई, उसका सौंदर्य भरपूर।’

1798 में जो चिंगारी कट्टबोम्मन ने सुलगाई थी वह आगे 1857 की क्रांति के दौरान आग बन कर प्रस्फुटित हुई। कातप्प पुलित्तेवन के पराक्रम के संबंध में तमिलनाडु के लोक गीतों के माध्यम से जाना जा सकता है। कहा जाता है कि वे 15 वर्ष अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करते रहे। उनके आगे कभी नहीं झुके। उन्होंने भी कट्टबोम्मन की तरह ही एक दाना धान भी कर के रूप में अंग्रेजों को देने से इनकार किया था। उन्हें ‘नेलकट्टान सेव्वल’ अर्थात् धान को राजस्व के रूप में न देने वाला राजा कहकर संबोधित किया जाता है। उन्होंने कर देने से इनकार करते हुए अंग्रेज सरकार को पत्र लिखा था कि ‘हम इस देश के वासी हैं, इस देश की मिट्टी में खेलकर बड़े हुए हैं। अतः हम इस मिट्टी के स्वामी हैं। हजारों मील से हमारे भारत में आकर जमने वाले आप जैसे विदेशियों को हम ‘कर’ क्यों दें?’

कहा जाता है कि अंग्रेज जब पुलित्तेवन को पालयम कोट्टे जेल में बंदी बनाने लेकर जा रहे थे तो उन्होंने रास्ते में शंकरन कोयिल के विष्णु मंदिर का दर्शन करने की इच्छा प्रकट की थी। जैसे ही वे मंदिर में प्रविष्ट हुए, चारों तरफ से धुआँ उठा और थोड़ी ही देर में प्रकाश नजर आया तथा पुलित्तेवन उस प्रकाश में अंतर्धान हो गए। भले ही यह किंवदंती हो, लेकिन यह सच है कि बंदी बनाए जाने के बाद पुलित्तेवन के संबंध में किसी प्रकार की कोई जानकारी नहीं मिलती। संभव है कि जेल में अंग्रेजों ने उन्हें फाँसी पर चढ़ा दिया हो। ऊमैत्तुरै वीरपांड्य कट्टबोम्मन के अनुज थे। मरुदु भाइयों से मिलकर उन्होंने अंग्रेजों की कूटनीति का सामना किया। उन्होंने अपने आपको अपने देश के लिए ही समर्पित किया था। वे देश के लिए फाँसी पर हँसते-हँसते चढ़ गए। अंग्रेज अफसर भी उनकी देशभक्ति के कायल थे। सुंदरलिंगम् कट्टबोम्मन के सेनानायक थे जो कट्टबोम्मन से मिलकर अंग्रेज सरकार के सभी षड्यंत्रों को विफल करने में सफल रहे। इनके अतिरिक्त अनेक ऐसे तमिल वीर हैं जिन्होंने अंग्रेज सरकार को मात दी।

स्मरणीय है कि तमिलनाडु के वेल्लोर शहर में 10 जुलाई, 1806 को सिपाहियों ने क्रांति की। इसे ‘वेल्लोर क्रांति’ के नाम से जाना जाता है। यह ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ भारतीय सिपाहियों द्वारा बड़े पैमाने पर किए गए विद्रोह का पहला उदाहरण है जो 1857 के स्वतंत्रता संग्राम से भी आधी सदी पहले घटित हुआ! यह वस्तुतः 1805 में पेश किए गए सिपाही ड्रेस कोड के कारण भारतीय सैनिकों की नाराज़गी का परिणाम था। कंपनी ने हिंदुओं को माथे पर तिलक लगाने और धार्मिक वस्त्र पहनने से मना कर दिया था तथा मुसलमानों के लिए दाढ़ी और मूँछों को ट्रिम करना अनिवार्य कर दिया था। अंग्रेजी कवि सर हेनरी न्यूबॉल्ट की कविता ‘गिलेस्पी’ वेल्लोर विद्रोह की घटनाओं का ब्यौरा है। उदाहरणस्वरूप यहाँ कुछ पंक्तियाँ दी जा रही हैं:

“The Devil's abroad in false Vellore,
The Devil that stabs by night,” he said,

"Women and children, rank and file,
Dying and dead, dying and dead."

यह निर्विवाद सत्य है कि कट्टबोम्बन हों या पुलित्तेवन, ऊमैत्तुरै हों या फिर अलगुमुत्तू, वेलुत्तम्पी हों या कोई और क्रांतिकारी, सब अकेले ही अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष कर रहे थे। एक संगठित व्यवस्था न होने के कारण इनके प्रयास विफल रहे। 1857 की क्रांति की विफलता की भी यही कहानी है।

लेकिन बाद में देश को महात्मा गांधी के रूप में एक नेतृत्व मिला जिसके कारण लोग संगठित होकर लड़े और परतंत्रता की जंजीरों को तोड़ने में सफल हुए। उन देशभक्तों के कारण ही आज हम आजाद भारत में साँस ले रहे हैं। पिछले वर्ष (2022) हम आजादी का अमृत महोत्सव मना चुके हैं। हम भारतीयों को स्वतंत्रता दिवस बच्चे की सालगिरह-सा लगता है (हरिवंशराय बच्चन)। पर यह कहना भी ज़रूरी है कि अंग्रेजों की गुलामी से तो 76 वर्ष पूर्व यह देश आजाद तो चुका है लेकिन यह आजादी अभी भी अधूरी है। जब देश से सांप्रदायिकता का साया हट जाएगा, उस दिन इस आजादी का महोत्सव सही अर्थों में सफल होगा।

आदरणीय पाठकवृंद! स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाओं के साथ हम इस अंक को आपके हाथों में सौंप रहे हैं। इस अंक में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में 'विरासत' स्तंभ के अंतर्गत 14 अगस्त, 1947 को संविधान सभा में पं. जवाहर लाल नेहरू द्वारा दिया गया ऐतिहासिक भाषण 'भारत के सपने' शीर्षक से प्रकाशित किया जा रहा है। साथ ही डॉ. मोटूरि सत्यनारायण का लेख 'महात्मा गांधी : उनकी हिंदुस्तानी का अंतरार्थ' तथा शिवमंगल सिंह सुमन की कविता 'जेल में आती तुम्हारी याद' भी सम्मिलित हैं। 'विरासत' स्तंभ के अंतर्गत राहुल सांकृत्यायन कृत 'सरस्वती का प्रकाशन' शामिल किया जा रहा है। महावीर प्रसाद द्विवेदी और 'सरस्वती' एक-दूसरे के पर्याय हैं। 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से उन्होंने हिंदी भाषा का परिमार्जन किया और खड़ीबोली को पद्य के लिए उपयुक्त सिद्ध किया था।

पत्रकारिता का क्षेत्र अपने आपमें एक विशिष्ट क्षेत्र है। यह चुनौतियों का क्षेत्र है। बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में पत्रकारिता के समक्ष अनेक चुनौतियाँ आकर खड़ी हो रही हैं। ईश्वरी ए. का आलेख 'पत्रकारिता की चुनौतियाँ' पत्रकारिता के दायित्व को स्पष्ट करने में सक्षम है। विविध ज्ञानक्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग नितांत आवश्यक है। पारिभाषिक शब्दावली सामान्य शब्दावली की तुलना में विशिष्ट होती है। डॉ. एस. एल. कुमारी का आलेख पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में सहयोगी विचारधाराओं पर प्रकाश डालता है। 'हिंदी प्रचार समाचार' पत्रिका सृजनात्मक लेखन और अनूदित साहित्य को भी समान रूप से प्रोत्साहित करती है। इस अंक में लघुकथा, कहानी, कविता, संस्मरण, निबंध, अनूदित कहानी आदि के साथ-साथ लोक साहित्य भी सम्मिलित है। अन्य स्थायी स्तंभ तो हैं ही।

पुनः आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की मंगलकामनाओं के साथ...

(सह संपादक)

भारत के सपने

(14 अगस्त, 1947 को संविधान सभा में दिया गया)

पं. जवाहर लाल नेहरू का ऐतिहासिक भाषण)

कई वर्ष पूर्व हमने भाग्य से भेंट करने का वादा किया था और अब वह समय आ गया है जब हम इस वादे को पूरा करेंगे, पूरी तरह से नहीं तो बहुत कुछ ही। ठीक आधी रात को जब सारा संसार सोता है, भारत जागकर स्वतंत्र जीवन का आरंभ करेगा। एक क्षण आता है और यह क्षण इतिहास में मुश्किल से आता है जब हम भूत से निकलकर वर्तमान में पहुँचते हैं; एक युग का अंत हो जाता है और राष्ट्र की आत्मा जो बहुत समय तक दबी हुई थी प्रखर हो जाती है। यह ठीक है कि इस क्षण हम भारत की, उसकी जनता की तथा मानव जाति की सेवा का प्रण लें। इतिहास के उषा-काल में भारत ने अपनी अनंत खोज यात्रा प्रारंभ की थी। कई शताब्दियों तक मार्ग नहीं मिला, प्रयास होते रहे। इस परिश्रम के उपरांत मिली सफलता और विफलता में भी भव्यता रही। सौभाग्य और दुर्भाग्य दोनों में ही भारत ने अपनी खोज से दृष्टि नहीं हटाई और आदर्शों को नहीं भूला जो उसे शक्ति प्रदान करते रहे हैं वह केवल एक कदम है। यह हमें इससे बड़ी सफलता और उपलब्धियों की ओर ले जाएगा जो हमारी प्रतीक्षा कर ही हैं। क्या हम इतने वीर और बुद्धिमान हैं कि इस अवसर को हाथ से न जाने देंगे और भविष्य की चुनौती को भी स्वीकार करेंगे?

स्वतंत्रता और शक्ति उत्तरदायित्व की माँग करते हैं। यह उत्तरदायित्व इस असेम्बली का है जो संप्रभुत्वसंपन्न भारत के लोगों की संप्रभुत्वसंपन्न समिति है। स्वतंत्रता से पूर्व हमने बहुत कष्ट सहें हैं और हमारा हृदय उन कष्टों की याद करके भर आता है। कुछ ऐसे कष्ट अभी भी हैं। फिर भी जो बीत गया वह बीत गया और भविष्य हमें पुकार रहा है। भविष्य आसान नहीं है और न यह आराम के लिए है। यह लगातार परिश्रम करने के लिए है। तभी हम उन वादों को पूरा कर सकेंगे जो हमने अब तक किए हैं और जो आज हम करने वाले हैं। भारत की सेवा का अर्थ है उन लाखों लोगों की सेवा जो कष्ट सहन कर रहे हैं। इसका अर्थ गरीबी, अशिक्षा, बीमारी आदि असमानता का अंत करना है। इस युग के महानतम व्यक्ति की अभिलाषा है कि हर आँख का आँसू पोंछा जाए। यह हमारे बस से बाहर की बात हो सकती है, लेकिन जब तक आँसू और कष्ट हैं तब तक हमारा काम खत्म नहीं होगा। और इसलिए हमें काम करना है, मेहनत से करना है और अपने सपनों को साकार करना है। ये सपने भारत के लिए भी हैं और विश्व के लिए भी क्योंकि आज संसार के सभी लोग आपस में इतना करीब आ गए हैं कि उनमें से कोई भी अलग रहने की कल्पना भी नहीं कर सकता।

शांति के लिए कहा जाता है कि वह अविभाज्य होती है। यही बात स्वाधीनता और समृद्धि पर भी लागू होती है। अब संसार एक है इसलिए यह बात विनाश पर भी लागू होती है। अब संसार के और खंड नहीं किए जा सकते। भारत की जनता से जिनके हम प्रतिनिधि हैं, हम अपील करते हैं कि वह श्रद्धा और विश्वास के साथ इस महान कार्य की पूर्ति के लिए हमारा साथ दे। यह तुच्छ और विनाशक आलोचना करने का समय नहीं है और न यह दूसरों पर दोषारोपण करने का वक्त है। हमें स्वतंत्र भारत की भव्य इमारत का निर्माण करना है जिसमें उसके सभी बच्चे निवास कर सकें।

(साभार - 'पूर्णकुंभ' अगस्त, 1999)

महात्मा गांधी : उनकी हिंदुस्तानी का अंतरार्थ

डॉ. मोटूरि सत्यनारायण

इस संसार से उठ जाने के ठीक 5 दिन पहले महात्मा गांधी ने 'हरिजन सेवक' में लिखा (25.1.1948)

'स्व. भाई जमनालाल जी तथा कई अन्य मित्रों ने मुझसे कहा, काम कुछ भी हो, जिसका वास्तव में प्रचार करना चाहते हैं, वह साहित्य नहीं, वह राष्ट्र-भाषा है। यही कारण है, मैंने दक्षिण भारत में राष्ट्र-भाषा के प्रचार के लिए जबरदस्त आन्दोलन चलाया।

हिंदी प्रचारक महात्मा गांधी को राष्ट्र-पिता ही नहीं, राष्ट्र-भाषा-पिता भी मानते हैं। इस सिलसिले में आज भी उनका नाम लेते नहीं थकते। क्या वे महात्मा गांधी के सिद्धांतों का पालन, विचारों का अनुसरण करते हैं? अगर करते हैं तो भाषा और साहित्य के बीच के भेद को पहचानने, तदनुसार राष्ट्रीयता की दृष्टि से भाषा का प्रचार करने हेतु पाठ्यक्रम, पाठ्य विषय, पाठ्य-पुस्तकों तथा पाठ्य सामग्री का निर्माण करते हैं? अगर नहीं करते हैं तो इसका कारण क्या है? इस पर गंभीरता से सोचा नहीं जा रहा है। हिंदी विरोध का अधिकांश कारण इसलिए भी हो सकता है कि हमने गैर-हिंदी भाषा भाषी जनता के सामने स्पष्ट रूप से नहीं रखा कि भाषा का संबंध प्रयोजनों से है, साहित्य का संबंध संस्कृति से है। अतः हिंदी प्रचार का उद्देश्य राष्ट्रीय प्रयोजनों को लेकर है।

महात्मा जी ने दक्षिण आफ्रिका से लौटने के बाद यह संकल्प किया कि अपना सारा कारोबार अपनी मातृभाषा गुजराती में चलाएँगे। प्रारंभ में उनका गुजराती का ज्ञान नगण्य-सा था। उस समय गुजराती एक विकसित भाषा भी नहीं थी। उन्होंने अपनी भाषा गुजराती की महान सेवा की। अपने लेखन द्वारा दूसरों को प्रोत्साहित कर गुजराती भाषा को उच्चतम साहित्य के द्वारा मालामाल किया और साथ ही उसे संसार की संपन्न भाषा की पंक्ति में बैठाया। कोष के निर्माण से लेकर व्याकरण के निर्माण तक; भाषा विकास के कार्य में भाग लिया। उनके महान प्रयास की हर जगह आज भी मुक्त कंठ से प्रशंसा होती है।

उनका विश्वास था और वे हम लोगों से अकसर कहा करते थे कि राष्ट्रभाषा, मातृ-भाषा के अतिरिक्त होगी, उसके स्थान पर नहीं। हम लोगों ने उनके इस कथन का अक्षरशः पालन किया। वास्तव में साहित्य से जुड़ा हुआ भाषा-प्रचार हिंदी प्रचारकों को साहित्य सम्मेलन से विरासत में मिला। यह विरासत आज हिंदी में भी चली आ रही है। हिंदी प्रचार का काम पहले लिपि परिवर्तन द्वारा शुरू हुआ। अर्थात् पिछली शताब्दी के अंत में उत्तर प्रदेश में फ़ारसी लिपि का बोल-बाला था। यह लिपि प्रशासन की थी और साथ ही शिक्षित समाज की भी थी। मुगलों के शासन के ज़माने में हिमालय की तराइयों में तथा गंगा-जमुना के दोआब में शासकीय भाषा के लिए फ़ारसी लिपि का इस्तेमाल होता था। इसलिए यह आन्दोलन चला

कि भाषा चाहे जो भी हो, लिपि भारतीय हो। इसी आन्दोलन के फलस्वरूप नागरी प्रचारिणी सभा का जन्म सन् 1893 में हुआ। ठीक इस साल के बाद इस आन्दोलन का भाषाई पहलू उभरा। फलस्वरूप हिंदी साहित्य सम्मेलन का जन्म हुआ। इस तरह लिपि, भाषा, साहित्य, संस्कृति के साथ हमारी राष्ट्रीयता उलझी हुई है। इस उलझन से राष्ट्र-भाषा के सच्चे स्वरूप को प्रस्फुटित करने की कोशिश तो बहुत बार हुई। लेकिन साहित्य और उससे जुड़ी हुई संस्कृति का पल्ला भारी पड़ा। मैंने तो कितने मोर्चों पर राष्ट्रीयता से संबद्ध व्यवहार से जुड़ा हुआ भाषापरक दृष्टिकोण को लेकर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। आशा बंध रही है कि वास्तविकता का प्रकाश रुकेगा नहीं।

इससे यह न समझा जाए कि हिंदी प्रचारकों को साहित्य तथा संस्कृति से अलग रहना चाहिए। साहित्य तथा संस्कृति तो प्रत्येक भारतीय के लिए उनके पूर्वजों की दी गई परंपरागत थाती है। उन्हें यह थाती अपनी-अपनी भाषा में प्राप्त होती रही है। राष्ट्रभाषा प्रचार का उद्देश्य राष्ट्रीयता की नींव पक्की करने, देश के भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी नागरिकों को राष्ट्रीय प्रयोजनों को साधने के लिए और एक-दूसरे के साथ जोड़ने के लिए है, न कि हिंदी के द्वारा ही राष्ट्रीय संस्कृति और साहित्य को विकसित करने के लिए। संस्कृति और साहित्य किसी भी भाषा के लिए एक अविभाज्य अंग के रूप में ही उभरता है, अपने अपने भाषा-माध्यम के द्वारा। स्वाभाविक रूप से कोई भी भाषाई समाज उसे आगे बढ़ाता है। साहित्य हिंदी के प्रचार के साथ इसलिए भी जुड़ गया है कि पिछली शताब्दी में और उससे पहले भी साहित्य में प्रयुक्त होनेवाली भाषा की तथाकथित हिंदी प्रांतों में एकरूपता नहीं थी। अगर एकरूपता थी तो शासकीय प्रयोजनों के लिए काम आनेवाली उर्दू भी थी। उर्दू का उपयोग तथाकथित शिक्षित समाज तक ही सीमित था। भारतीयतावाद, राष्ट्रीयतावाद और जनतन्त्रवाद से उसका प्रभावित होना स्वाभाविक था। इसलिए भिन्न-भिन्न बोलियों, उपभाषाओं, साहित्यिक भाषा माध्यमों में विभक्त इलाकों को एक छत्र में लाने और शिक्षा के प्रयोजनों की दृष्टि से प्रामाणिक भाषा को विकसित करने की आवश्यकता थी।

इसलिए उर्दू जो कालांतर में फ़ारसी अरबी शब्दों से बोझिल हो गई, उसे जनता के स्तर पर खींच लाने के लिए फारसी-अरबी से विमुक्त भाषा स्वरूप की कल्पना की गई। यह कल्पना साकार होकर हिंदी बन गई जिसे आज उत्तर भारत के सात प्रदेश अर्थात् बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली और मध्य प्रदेश के लोग अपने प्रदेश की भाषा मानते हैं और उसे अपनी स्कूली शिक्षा का माध्यम बनाए हुए हैं। वास्तव में इन प्रदेशों की, विशेषकर गाँवों के जन समाज की यह स्कूली भाषा है। इस समाज की साहित्यिक भाषा भी उनकी अपनी-अपनी बोलियों में है। इस प्रकार राष्ट्र-भाषा के नाम से तथाकथित हिंदी प्रांतों को भी एक प्रामाणिक व्याकरण के बल पर प्रामाणिक भाषा भी प्राप्त हो गई। हिंदी के पीछे संख्या बल है। उसका अर्थ हिंदी को स्वभाषा के तौर पर मानने का है, न कि तथ्य का है। तथ्य इस अर्थ में नहीं है कि हिंदी उन प्रदेशों की भाषा है जैसे तमिल, कन्नड, मराठी, तेलुगु आदि आदि।

संस्कृति और साहित्य का जितना पारस्परिक संबंध है, उससे कहीं अधिक संबंध भाषा से इसलिए भी मालूम होता है कि अंग्रेज़ों के राज्य में सभी शासकीय तथा अन्यान्य व्यवहारों के लिए एक सशक्त भाषा

माध्यम के रूप में अंग्रेज़ी उभरी। अंग्रेज शासकों की यह नीति थी कि सभी भारतीय भाषाओं को साहित्यिक निर्माण तक ही सीमित रखा जाए और उन्हें व्यवहार यानी शासन, व्यापार, उद्योग आदि के क्षेत्रों में प्रवेश न दिया जाए। इन दो सौ वर्षों में देश-भर भाषा-पंडितों ने इस नए अवसर से फायदा उठाया और सदियों के पुराने साहित्यों को प्रयोग में लाकर रख दिया, तदनु रूप नए साहित्य की रचना की और आज भी करते आ रहे हैं। विश्वविद्यालयों में और बाहर भी सभी भारतीय भाषाओं की स्थिति यही है कि साहित्य के पंडित मिल सकते हैं। साहित्यकार और कवि मिल सकते हैं, लेखक और उपन्यासकार मिल सकते हैं, नाटककार भी मिल सकते हैं, लेकिन ऐसे भाषाविद् विरले ही मिलेंगे जो शासन, व्यापार, उद्योग, विज्ञान, तकनीकी तथा अन्यान्य आधुनिक प्रयोजनों के लिए उपयुक्त भाषा के जानकार हों। प्रादेशिक भाषाओं की यही दशा पहले भी थी। क्योंकि एक जमाने में संस्कृत, उसके बाद फ़ारसी को उच्चतम विचारों के अभिव्यंजन के लिए उपयुक्त माध्यम मान लिया गया था। संभवतः यह आवश्यक इसलिए था कि इस समय हमारे साहित्यिक माध्यम को सार्वदेशिक बनाना था। इस समय हमारी सार्वदेशिकता या अंतर्देशीयता का प्रवाह ऊपर से नीचे नहीं आने का है, बल्कि अब यह युग जमीन से अपने आप फूटकर अधिक से अधिक निकल आता है। अब यह युग बुद्धिजीवियों का नहीं, वरन् श्रमजीवियों का है।

इस सिलसिले में इस बात का स्पष्टीकरण होना चाहिए कि आज भाषा और साहित्य की भूमिका अधिकतर सामाजिक उपकरण की है। वैयक्तिक पांडित्य का मूल्य भी सामाजिक उपकरण की कसौटी पर कसा जाएगा। इसलिए भाषा और साहित्य सामाजिक साधन बन गए हैं और वे समाज निर्माण व समाज सेवा के एक मूल्यवान साधन के रूप में उभर रहे हैं। प्रयोजन की दृष्टि से भाषा और साहित्य के बीच में रेखा खिंच गई है। सामाजिक प्रयोजनों के उपयोग के लिए आवश्यक साहित्य का निर्माण सांस्कृतिक साहित्य के निर्माण से अलग होता जा रहा है। संस्कृति-परक साहित्य का मूलबिंदु कल्पना, परिकल्पना शिल्प, सौंदर्य-रसोत्पादन, रसविश्लेषण आदि ऐसी अनेकों प्रक्रियाएँ हैं जिनके द्वारा मनुष्य अपनी अनुभूतियों का संसार बनाता है और रसों की उत्तुंग तरंगों में प्लावित होकर आनंद का अनुभव करता रहता है। ऐसे लोगों का संसार मानसिक अनुभूतियों का है। इस अनुभूति में मनुष्य के मनोविज्ञान के अनुभूतिपूर्ण अध्ययन समाज और मनुष्य के संसर्ग से उद्भूत विभिन्न अनुभवों का विश्लेषण, प्रकृति, मनुष्य तथा समाज से परिवेष्टित कितने ही प्रकार के मनोगोचर, दृष्टिगोचर, वास्तविक तथा परिकल्पित दृश्यों के संपर्क से संजनित आमोद-प्रामोदों की अगाध तल्लीनता है। इसके अलावा कितने ही प्रकार के दार्शनिक तथा भौतिक तत्त्वों का अध्ययन तथा उनके गुणों का विश्लेषण भी है। यह सारा कार्य प्रत्येक भाषा-भाषी के लिए, जिसका वह अभिन्न अंग है, स्वाभाविक रूप से प्राप्त करना सहज है जो मातृ-भाषा या प्रादेशिक भाषा के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

वर्तमान युग में स्वधर्म के अर्थ का दायरा परिवार, समाज ही नहीं, बल्कि राष्ट्र के साथ भी जुड़ गया है। संसार के सभी भू-भागों में बसनेवाले लोग अपने-अपने पूर्व इतिहास के बल पर भाषाई तथा समाजी अस्मिता को लेकर राष्ट्रों के रूप में गठित होते जा रहे हैं या करीब-करीब हो गए हैं। भारत को संसार के

राष्ट्रों की होड़ में अपने को सजग तथा सजीव रखना हो तो राष्ट्रधर्म को अपनाना है। अतः राष्ट्र के गठन के लिए भाषा चाहिए। उसीको राष्ट्र-भाषा मानते हैं। राष्ट्र की संस्कृति का निर्माण राष्ट्र के साथ संवेदनशील मानसिक प्रवृत्तियों के द्वारा होगा। ये ही प्रवृत्तियाँ राष्ट्रीय प्रवृत्ति को जन्म देंगी। राष्ट्र का निर्माण उसके शासन क्षेत्र, विधान मण्डल और न्याय मण्डलों के द्वारा होगा जो एकता, न्यायपूर्णता, बन्धुता के सहारे बलवान होगा। इसीलिए महात्मा गांधी ने अपने सांस्कृतिक जीवन के लिए रामायण, गीता, कुरान, बाइबिल को बिना भेदभाव के अपनाया और भाषा के क्षेत्र को उससे अलग रखा। फिर भी राष्ट्रभाषा के क्षेत्र में भाषा पर जोर दिया जिससे राष्ट्र-भाषा का क्षेत्र धर्म-धर्म के बीच में उलझ न जाए और उसे व्यवहार तक ही सीमित बनाकर धर्मनिरपेक्ष बनाए रखा जाए। उनकी हिन्दुस्तानी का अंतरार्थ मैंने यही समझा, क्योंकि बिना धर्म के भेदभाव के हिंदू और मुसलमान, ईसाई और दूसरे लोगों ने अपने को एक दूसरे से जुड़ने के लिए हिंदुस्तानी से काम लिया।

(साभार : 'हिंदी प्रचार समाचार' मई 1984)

धरोहर : कविता

स्वतंत्रता दिवस पर विशेष

जेल में आती तुम्हारी याद

- शिवमंगल सिंह सुमन

प्यार जो तुमने सिखाया
वह यहाँ पर बाँध लाया
प्रीति के बंदी नहीं करते कभी फ़रियाद
जेल में आती तुम्हारी याद।
बात पर अपनी अड़ा हूँ
सीकचे पकड़े खड़ा हूँ
सकपकाया-सा खड़ा है सामने सय्याद
जेल में आती तुम्हारी याद।
विश्व मुझ पर आँख गाड़े
मैं खड़ा छाती उघाड़े

देख जिसको तेग कुंठित, कैप रहा जल्लाद
जेल में आती तुम्हारी याद।
दृढ़ दीवालें फोड़ दूँगा
लौह कड़ियाँ तोड़ दूँगा
कर नहीं सकतीं मुझे ये बेड़ियाँ बर्बाद
जेल में आती तुम्हारी याद।
सुमन उपवन से खिलेंगे
और फिर हम तुम मिलेंगे
किंतु जब हो जाएगा हिंदोस्ताँ आज़ाद
जेल में आती तुम्हारी याद।

मानव किसी शून्य में जन्म न लेकर एक विशेष भौगोलिक परिवेश में जन्म और विकास पाता है, जो धरती, आकाश, नदी, पर्वत, वनस्पति आदि का संघात है। मनुष्य का शरीर, जिन पंच तत्वों का सानुपातिक निर्माण है, वे ही व्यापक रूप से उसके चारों ओर फैले हुए हैं। इस भौतिक परिवेश का स्वभाव ही प्रकृति है।

- महादेवी वर्मा

पत्रकारिता की चुनौतियाँ

- ईश्वरी ए.

पत्रकारिता मानव जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है। हर दिन सूरज की रोशनी से पत्रकारिता की यात्रा शुरू होती है। आजकल ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसे समाचार पत्र पसंद नहीं है। हर कोई समाचार पत्र का इंतजार करता है। श्वास हमारे जीवन के लिए आवश्यक है और पत्रकारिता हमें जीना सिखाती है। हमें उस दुनिया को समझने में मदद करती है जिसमें हम रहते हैं। प्रारंभिक काल में इसका मुख्य कार्य था नए विचार का प्रचार करना, तकनीकी विकास, परिवहन व्यवस्था में विकास। उद्योग एवं वाणिज्य के प्रसार के कारण आज पत्रकारिता का मुख्य कार्य सूचना प्रदान करना, शिक्षा प्रदान करना, लोगों का मनोरंजन करना, जनमत को आकार देना और लोकतंत्र की रक्षा करना बन गया है। पत्रकारिता के लिए अंग्रेजी में 'जर्नलिज्म' कहा जाता है जो जर्नल से निकला है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'दैनिक' है। दिन-प्रतिदिन के क्रियाकलापों, सरकारी बैठकों का विवरण 'जर्नल' में रहता है। 17वीं एवं 18वीं सदी में 'पीरियाडिकल' के स्थान पर लैटिन शब्द 'डियूरनल' और 'जर्नल' शब्दों का प्रयोग हुआ। 20वीं सदी में गंभीर समालोचना और विद्वत्तापूर्ण प्रकाशन को इसके अंतर्गत माना गया। जर्नल से बना 'जर्नलिज्म' अपेक्षाकृत व्यापक शब्द है। समाचार-पत्रों एवं विविध कालिक पत्रिकाओं के संपादन एवं लेखन तथा तत्संबंधी कार्यों को पत्रकारिता के अंतर्गत रखा गया।

जनसंचार में भाषा-प्रयोग के कुछ सूत्र

- | | |
|------------|-------------------|
| • स्पष्टता | • उद्देश्यपूर्णता |
| • सत्यता | • संक्षिप्तता |
| • पूर्णता | • निरंतरता |
| • रोचकता | • जागरूकता |

पत्रकारिता ने समाज में मौजूद सभी अंधविश्वासों को खत्म कर दिया। इन सबके बावजूद सामाजिक बदलाव का काम चुनौतीपूर्ण है। समाज में नई नैतिकता और व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए प्रयासों की आवश्यकता है। समाचार एकत्र करना, सूचना एकत्र करके संपादन करना, उचित प्रस्तुति, समाचार लेखन आदि पर विशेष ध्यान देना चाहिए। पत्रकारिता एक मशाल की तरह है। वह हमें समाचारों के माध्यम से समाज से जोड़ती है। वह समाज में व्याप्त विसंगतियों और कुरूपताओं के चित्र दिखाने में सक्षम है। वह हर समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। इसलिए इसे सामाजिक सहयोगी अस्त्र कहा जाता है। यह एक सामाजिक जिम्मेदारी है कि लोगों को बहकाए बिना समाज के हर आयाम से जुड़ी हुई खबरों का खुलासा करना। पत्रकार को अपनी निजी स्वार्थ को भूलकर समाज हित के लिए कार्य करना चाहिए। समाज का सही चित्र दिखाने के लिए पत्रकार को ईमानदार होना आवश्यक है।

समाज के यथार्थवादी चित्रण के कारण पत्रकारिता आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। प्रिंट मीडिया समाज की मूक आवाज की लिखित अभिव्यक्ति है। पत्रकार जनता की आवाज बनकर पूरी सच्चाई और निष्ठा के साथ सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक घटनाओं का चित्रण करता है। पत्रकारिता

समाज और जनता के बीच एक सेतु का कार्य करता है। समाज और पत्रकारिता का अन्योन्याश्रित संबंध है। पत्रकारिता समाज को अपनी मान्यता दिलाती है। पत्रकारिता को श्रेष्ठ रूप प्रदान करने में समाज का अतुलनीय योगदान है। पत्रकार एक तरह से मार्गदर्शक का काम करता है। वह व्यापक स्तर पर जनसंचार की प्रणाली को आगे ले चलता है। सोशल मीडिया में जाली समाचारों का प्रसारण, तकनीकों का दुरुपयोग, धन और यश कमाने की लालसा, राष्ट्रीय एवं मानवीय मूल्यों की कमी, राजनीतिज्ञों का हस्तक्षेप आदि कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनके कारण पत्रकारिता 'मिशन' से 'व्यवसाय' में बदल गया।

आज के समाज में लोगों को आकर्षित करने के लिए सनसनीखेज समाचारों को सुर्खियों के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। समाचार पत्र और मीडिया चैनल अपनी-अपनी टी आर पी के चक्कर में पड़कर यह भूलते जा रहे हैं कि नैतिक क्या है और अनैतिक क्या है।

आज हम समाचार पत्र में समाचार आने से पहले ही अपने मोबाइल फोन पर समाचार देखते हैं और बिना यह जाने कि समाचार सत्य है या असत्य, उस समाचार को सोशल मीडिया पर शेयर कर देते हैं। वाट्सएप्प पर साझा कर देते हैं। बस एक क्लिक, समाचार सब जगह वाइरल हो जाता है। पत्रकार ही नहीं आज हर एक नागरिक सोशल मीडिया में कुछ-न-कुछ घटनाओं को साझा कर रहा है। अतः यह सबकी नैतिक जिम्मेदारी है कि कुछ भी सोशल मीडिया पर साझा करने से पहले उसकी सत्यनिष्ठता का ध्यान रखे। यह भी ध्यान देना होगा कि किसी भी व्यक्ति विशेष को इससे क्षति न पहुँचे।

पत्रकारिता सूचना एकत्रित करने का केंद्र मात्र नहीं है। परंतु यह वास्तव में एक रचनात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन है। पत्रकारिता, सामाजिक परिवर्तन तथा समाज पुनःनिर्माण की धुरी है। आज पत्रकारिता अपने नए रूप के साथ विकसित हो रही है। उसका कारण है आज के वैज्ञानिक युग में जनसंचार माध्यमों के क्षेत्र में घटित नवीन क्रांति। एक सच्चे पत्रकार के कुछ प्रमुख लक्षण इस प्रकार हैं-

- ❖ किसी भी पत्रकार को कर्तव्यनिष्ठ, स्पष्टवादी, नियंत्रित और सिद्धांतवादी होना चाहिए।
- ❖ मन, वचन एवं कर्म तीनों रूपों में एकनिष्ठता होनी चाहिए।
- ❖ पत्रकार को हमेशा जनता के हित में काम करना चाहिए।
- ❖ उसे सहनशीलता और त्याग की प्रवृत्ति को अपनाना चाहिए।
- ❖ संप्रेषण कौशल में दक्ष होना चाहिए।
- ❖ ईमानदार और निष्पक्ष होना चाहिए।

हर सूचना समाचार नहीं हो सकती। अतः पत्रकार को सतर्क रहना चाहिए कि वह किस प्रकार की सूचना जनता तक प्रेषित कर रहा है। किसी भी घटना को समाचार बनने के लिए उसमें रोचकता, नवीनता, जनता की रुचि, प्रभावोत्पादकता आदि गुणों का समावेश होना चाहिए। पत्रकारिता एक दायित्व भरा क्षेत्र है।

Old No. 216/3, New No.68/1, Periya Subbannan Street, K.K.Pudur, Coimbatore - 641032

रसोईघर...

मूल : तमिल कहानी : त. क. तमिल भारतन

अनु: अलमेलु कृष्णन

कुछ घंटे ही बचे थे, जल्दी-जल्दी मुरुगन ने अपनी माँ को फोन किया। मुश्किल के वक्त में उसी से सलाह ली जाती है जिसने इस दुनिया में पहचान दिलाई। चार-पाँच बार फोन करने पर भी माँ ने फोन नहीं उठाया। आखिरी बार कोशिश करके देखूँ। उठाया तो ठीक, नहीं तो... ऐसा नहीं होगा, वह जरूर उठाएगी। ऐसे सोचते ही रहा कि मोबाइल से 'वांछित सब कुछ....' की ध्वनि निकली।

'अभी समाचार देखा। आधी रात से कर्फ्यू लागू हो जाएगा। तुमने कहा था कि हॉस्टल खाली करके आ रहे हो? अब कहाँ हो?'

'हेलो, माँ, यहाँ बहुत भीड़ है। कोई ट्रेन नहीं है। कारवाले कार चलाना नहीं चाहते। बस से ही आना पड़ेगा। इस भीड़ में आने से तो न आना ही अच्छा होगा। लेकिन चेन्नै में कहाँ ठहरूँ? कोई भी अपने घर के अंदर आने नहीं देगा, कुछ समझ में नहीं आ रहा है। तुम्हीं कोई सुझाव दो न।'

परामर्श विभाग में सेवा करने वाले मुरुगन को परामर्श देती हैं उसकी माँ।

'अगर तुम गुस्सा नहीं करोगे तो मैं एक बात बताऊँ।'

'क्या वल्लि के घर जाना है? आगे बोलना ही नहीं। बस ...फोन रख दो।'

लोगों से खचाखच भरा कोयंबेड बस अड्डा, तांबरम निगम पार करने से इनकार करती मोटर गाड़ियाँ, स्टेशन पर ही सोने वाली रेलगाड़ियाँ। इस प्रकार जीवन की सहजता को ही पलट दी थी कोरोना ने। सरकार द्वारा 48 दिनों तक धारा 144 लागू करने की घोषणा होते ही, किराए के आवास के वाट्सएप ग्रुप में प्रबंधक ने एक संदेश पोस्ट किया- 'खाना बनाने के लिए कोई नहीं आएगा, कोई रेस्टोरेंट भी नहीं होंगे।' इसे देखते ही मुरुगन कमरा खाली करके अपने गाँव के लिए रवाना हुआ। कर्फ्यू के कारण शाम तक ऑटो या टैक्सी भी नहीं थे। हास्टल के द्वार पर खड़े होकर ऑनलाइन अपडेट करते-करते उसके मन में यह डर पैदा हुआ कि कोयंबेड जाने से कोरोना संक्रमित हो सकता है।

रिश्तेदार के घर जा सकता है, लेकिन ऐसा कोई नजदीकी रिश्तेदार तो है नहीं कि उसे अड़तालीस दिन बिठाकर खाना खिलाए। दोस्तों के साथ रह सकता है। एक ही दोस्त जो अब तक अकेला था, वह भी पिछले महीने शादी करके दुकेला बन गया। अपने कारण किसी को परेशानी न हो, इस विचार से मुरुगन ने किसी को परेशान नहीं किया। यह झुंझलाहट अलग है कि माँ भी बिना सोचे समझे वल्लि के घर पर रहने की सलाह देती है।

अपने आपको कोसते हुए वह पूरब की ओर चलने लगा। वल्लि का घर उस दिशा में नहीं था। इधर

उधर कुत्तों, आँखें घुमाने वाली उल्लुओं और घोंसलों में समाहित पक्षियों के अलावा तारों को देखते हुए वह चलता रहा, चलता रहा, चलता ही रहा। अस्थिर संसार में प्रकृति दबाती है। आत्मरक्षा के लिए भागकर छिपना पड़ता है। यह वस्तु स्थिति जीवन के प्रति निराशावाद को जन्म देती है।

यह एक अप्रत्याशित समय था। सबरे का समय था। मोबाईल बजने लगा 'शाम सुलगती है जब भी तेरा खयाल आता है। सूनी सी गोरी बाहों में धुँआ सा भर जाता है...'। इन पंक्तियों को सुनाने के बाद कॉल बंद हो गई। वल्लि बुला रही थी। लगभग दो महीने बाद मुरुगन ये पंक्तियाँ सुन रहा है। इन पंक्तियों ने उसकी स्मृतियों को झकझोर दिया।

फिर से 'आ जा रे परदेसी, मैं तो कब से खड़ी इस पार, ये आँखियाँ थक गई पंथ निहार, आ जा रे परदेसी' का गाना बजा तो उसने काल स्वीकार कर लिया। बोला तो कुछ नहीं।

'मुझे मालूम है कि तुम मुझसे नहीं बोलोगे। बोलने की जरूरत भी नहीं। माँ जी से बात हुई। कहा कि गुस्से में तुमने फोन बंद कर दिया। आधी रात के समय चेन्नै में यहीं कहीं होंगे। लोकेशन भेजो। मैं आकर ले जाती हूँ।'

जवाब की प्रतीक्षा किए बिना वल्लि ने फोन रख दिया। जब तक उसने लोकेशन भेजी, तब तक कार लेने के लिए अपार्टमेंट ब्लॉक के बेसमेंट तक आ गई थी वल्लि। जैसे ही लोकेशन देखा तो उसे आश्चर्य हुआ कि मुरुगन उसके घर के ठीक सामने था। वल्लि ने उसे पुकारा, पर मुरुगन हिला ही नहीं। फिर से बुलाने पर भी कोई फ़ायदा नहीं हुआ। अंत में उसे लेकर लिफ्ट से अटारहवीं मंजिल पहुँची।

प्रतिभाशाली और साधन संपन्न महिला वल्लि कंप्यूटर साइंस विभाग में सॉफ्टवेयर इंजीनियर है। उसका मासिक वेतन चार लाख से अधिक है। इसे सोलह कैसे बनाया जाए इसका पता लगाना ही उसका लक्ष्य है। उसके माता-पिता नहीं हैं या तो अलग हो गए होंगे। वल्लि भी माता-पिता के साथ न रहना ही पसंद करती है। स्कूल से कॉलेज तक वह हॉस्टल में ही रही और नौकरी लगने के बाद भी पैइंग गेस्ट के रूप में ही रही। मासिक आय एक लाख पार करते ही ईएमआई पर 18 वीं मंजिल पर यह मकान खरीद लिया। इसे घर कहने के बजाय विश्राम स्थल कहा जा सकता है। वल्लि को यही पसंद है। 'पंख फैलाओ, उड़ते रहो'- वह समाज में उड़ते रहनेवाली है। उसका विचार था कि केवल उड़ान ही उसके जीवन के खालीपन की भरपाई कर सकती है। उसके अनुसार सफलता में ही खुशी है।

पच्चीस साल की आयु पार करने से पहले उसने उचित व्यक्ति को पहचाना। वह व्यक्ति था मुरुगन। मुरुगन तो छोटे से शहर से निकलकर चेन्नै पहुँचा था। माँ जी के परिश्रम से पला था। वह अभी-अभी लाखों में कमाने लगा था। दोनों एक ही दफ्तर में कार्यरत थे। मासूम बच्चे जैसा चेहरा, कोई पूर्व-प्रेम नहीं, लड़कियों के पीछे पड़नेवाला भी नहीं। वल्लि ने सोचा कि उससे शादी करना ही सही फैसला होगा। उसकी तरफ से इस सोच को सही या गलत कहने वाला भी कोई नहीं। उसने निर्णय लिया और मुरुगन को बता दिया।

खैर, अब वह मुरुगन को देखकर 'यहीं रुको' कहकर अन्दर जाती है। एक बाल्टी और विदेशी सैनिटाइजर लेकर आई। थैले को बाल्टी में रखने को कहकर मुरुगन के हाथों पर सैनिटाइजर छिड़का दी। मुरुगन का चेहरा कीटनाशक से मरनेवाले कीट की तरह बदल गया।

वल्लि ने कहा- 'यहीं सो जाओ।'

उसने भी स्वीकृति के रूप में 'म्' कह दिया।

अंदर घुसकर आगे के कमरे में ही लेट गया। 'एसी' वाले दूसरे कमरे में जाकर वल्लि सो गई।

वल्लि दूसरी स्त्रियों की तरह नहीं है। उसका आत्म-बोध और सपने औसत से ऊपर था जो मुरुगन को अच्छा लगा। एक-दूसरे को समझने और शादी करने का फैसला करने के बाद, मार्गशीर्ष महीने के एक रात को मुरुगन ने पहली बार इसी घर में प्रवेश किया था। दुर्लभ कलाकृतियों, कलिहारी फूल के हल्के रंग की दीवारों और अत्यावश्यक चीजों के अलावा उस घर में केवल वही अतिरिक्त रूप में था।

दोनों बोलते रहे, बोलते रहे, सुबह पक्षियों के घोंसले से निकलने तक बोलते रहे।

'क्या खाने के लिए कुछ ऑर्डर करूँ?' उसने पूछा।

'वह सब नहीं चाहिए। क्या हम एक कॉफी पी लें?' 'आर्डर मत देना, मैं खुद बना देता हूँ' कहते हुए उसने रसोईघर में प्रवेश किया।

यह आश्चर्यजनक और चौंकाने वाली बात थी। इतनी बड़ी रसोई में बर्तन नहीं; पीने के लिए आरओ का पानी, फलों को खराब होने से बचाने के लिए फ्रिड्ज के सिवा और कोई खास चीज़ नहीं।

'अरे! यह क्या! तुम्हारी रसोई में कुछ भी नहीं है?'

'किचन होना ही मेरा सपना है क्या? क्या तुम जानते हो कि प्रत्येक परिवार पकाने की तैयारी करने और पकाने में कितना समय व्यतीत करता है? पिछली कई पीढ़ियों से खाना बनाने का काम महिलाएँ ही करती आ रही हैं। महिलाओं को पुरुष और उसके परिवार के लिए रसोई बनाना है। महिलाओं के लिए मृत्यु तक रसोईघर ही एकमात्र आश्रय है। खैर, ज्ञान बढ़ता गया और समाज में महिलाओं की स्थिति सुधरने लगी। लेकिन इसके बाद भी यह परिस्थिति बदली क्या? नहीं.. क्यों? आज भी महिलाओं के लिए अलग से पत्रिकाएँ चलानेवाले भी मुफ्त लिंक के रूप में पाक विधि ही तो देते हैं! सामाजिक गतिशीलता में यह एक कानून बन गया कि महिला हो तो उसे खाना बनाना चाहिए। बस इतना ही..!'

'अरे! दोपहर दफ्तर में खा लोगी। फिर सुबह और रात के लिए?'

'सुबह जूस और शाम को कुछ न कुछ मँगवा लेती हूँ। बीच-बीच में खाने की जगह कोई फल।'

'उफ़! अगर मैं कल यहाँ आ जाऊँ, तो क्या मेरी भी यही स्थिति होगी?'

‘जरूरी नहीं! लेकिन, तुम भी इसका पालन करो तो अच्छा होगा। और ले, पुरुषों के खाना बनाने से भी मैं असहमत हूँ। भले ही तुम दस मिनट खाने के लिए एक घंटा खाना पकाने में लगाते क्या? तुम्हीं सोचो कि कैसे उत्पादक ढंग से उस समय का उपयोग कर सकते हो। एक हजार परिवार एक घंटा लगाकर एक बार का खाना पकाते हैं। यदि उसी खाने को सामूहिक रूप से पकाया जाए तो एक हजार परिवारों का एक घंटा अर्थात् एक हजार घंटे की बचत हो जाती न?’

शादी होते ही वे सुहाग रात मनाने महाद्वीप पार कर गए। एक महीना गुज़र गया, सामान्य जीवन भी फला-फूला। नई नई शादी होने के कारण वह पत्नी की बातों से बँधा हुआ था। खाना ऑर्डर करके ही खा रहे थे। कुछ महीनों के अन्दर माँ के द्वारा फसल काटकर भेजा ‘मापिल्लै चम्पा’ चावल का बोरा 18वीं मंजिल पर पहुँच गया था। ‘इसे पकाना नहीं! बर्बाद भी नहीं करना हो तो इसे वापस भेज दो न,’ वल्लि ने कहा। मुरुगन अपनी माँ की मेहनत को - अपने खेत के चावल को - वापस करना नहीं चाहता था। जो चीज बेकार है उसे घर में रखना नहीं चाहती वल्लि। झगड़ा शुरू हुआ। बढ़ता गया, विवाह विच्छेद का ही रास्ता खोल दिया। विवाह विच्छेद से पहले ही दिल टूट गया। वकील नोटिस आने से पहले ही मुरुगन घर से निकल गया और अपने पुराने आवास पर चला गया।

‘अरे! उठो न। कब तक सोओगे?’

‘...’ मुरुगन की दोनों भौहें आकाश की ओर उठी हुई थीं, मानो कुछ पूछ रही हों !

‘भूख नहीं लगी क्या? समय देखो’

वह उसके लिए ब्रेड और जैम ले आई। सूरज की रोशनी फ़ैली हुई थी। बालकनी से नीचे देखने पर पेड़ और इमारतें ही थीं। मनुष्य या गाड़ियों का नामो निशान नहीं। सोचा कि जिस घर में रहने का अधिकार नहीं है, उस घर में नहीं रहना है और कैसे भी हो हाथ- मुँह धोकर गाँव के लिए निकल जाना चाहा।

वल्लि मुरुगन के इस सवाल की प्रतीक्षा में थी कि ‘क्या तुमने खाना खा लिया’

कोरोना के चलते, वर्क फ्रम होम की घोषणा के बाद वल्लि एकदम बदल गई है। जो उड़ती रहती है, उसके लिए यह घोंसला ही अंतरिक्ष बन गया। यही उसके लिए सजा भी है। लॉकडाउन के कारण खाना बनाने के लिए कोई भी नहीं मिला और वायरस के संक्रमण के कारण किसी पर भरोसा करके खाना खरीदना भी असंभव हो गया।

वल्लि के कमजोर पतले शरीर और फीका चेहरा देखकर मुरुगन ने केवल ‘तुम’ कहा। आकाश की दीवार तोड़ पानी बरसाकर फसल उगानेवाले काले बादल की तरह वल्लि रोने लगी। उसे छूने में भी संकोच हुआ। मुरुगन को। ‘अभी आया’ कहते हुए वह पानी लेने किचन में घुसा। घुसते ही उसे झटका-सा लगा। साथ ही आश्चर्य भी हुआ। नए बर्तन भरे हुए थे। बिजली का चूल्हा भी था। पर सभी अव्यवस्थित थे। पकाने के लिए दाने और दालें थीं। फ्रिड्ज सब्जियों से भरा था। एक तरफ चावल का बोरा। चेहरे पर कोई

भाव प्रकट किए बिना उसने पानी लाकर दिया।

‘निकलता हूँ’ वह बिदा लेने लगा।

‘खाना पकाके निकलोगे?’

रोया, गले लगाया, खाना पकाया, खाया और खिलाया।

‘निकलता हूँ’ कहकर निकलने वाला मुरुगन एक मंडल अर्थात् अड़तालीस दिनों तक वहीं रुका रहा। माँ ने वाट्सप्प कॉल पर ‘नानी की पाकविधि’ से खाना बनाना सिखाया। भोजन बुनियादी आवश्यकता बन गई। चावल का बोरा भी खाली हुआ। अड़तालीस दिन पूरे हो गए। कफरू में भी ढील दी गई। वल्लि का मन खुशी से भर गया और उसका वजन बढ़ गया। वे दो से अब तीन हो गए। कौन जाने, शायद चार भी हो सकते हैं। माँ को खुशी हुई; और होने वाली माँ को भी।

दरवाजे पर आए वकील नोटिस को दोनों ने मिलकर फाड़ डाला। जिस रसोईघर की रसोई ने मानसिक दूरी का बीज बोया; उसी ने प्यार और आत्मीयता को बढ़ाया। यही विश्वास बन गया।

उस दिन के अखबार की सुर्खी : ‘देश से पूरी तरह दूर हुआ कोरोना संक्रमण। सोशल डिस्टेंसिंग की अब जरूरत नहीं।’

Lakshminagar, Pulivalam, Thiruvavur - 610109

लोक संस्कृति

करगाट्टम

करगम अर्थात् कमंडल या पुष्पकलश। ग्राम देवाताओं के उत्सव में विशेष रूप से मारियम्मन (वर्षा देवी) और गंगै अम्मन (नदी देवी) को प्रसन्न करने के लिए लोग सिर पर करगम रखकर संतुलित करते हुए नृत्य करते हैं। यह तमिलनाडु का लोकनृत्य है। भरतनाट्यम मुद्राओं और अन्य लोकनृत्य शैलियों से भंगिमाओं को अपनाकर इस विशिष्ट प्रकार की शैली को निर्मित किया गया है। परंपरागत रूप से, इस नृत्य को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है- ‘आट्ट करगम’ (इसे मुख्य रूप से मनोरंजन के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। यह एक तरह से खुशी का प्रतीक है) तथा ‘शक्ति करगम’ (इसे सिर्फ मंदिरों में आध्यात्मिक भावना से प्रदर्शित किया जाता है)। वस्तुतः नृत्य के माध्यम से बारिश का आह्वान करना इस नृत्य का उद्देश्य है। आम तौर पर ‘अमृतवर्षिणी’ गीत पर इस नृत्य का प्रदर्शन किया जाता है। अनेक तमिल फिल्मों में इस नृत्य शैली को देखा जा सकता है। 1989 में प्रदर्शित तमिल फिल्म ‘करगाट्टकारन’ इस लोक नृत्य और लोक कालाकारों की जीवन शैली को उकेरने में सक्षम है।

(हिंदी प्रचार समाचार डेस्क)

पारिभाषिक शब्दावली संबंधी विभिन्न विचारधाराएँ

- डॉ. एस. एल. कुमारी

पारिभाषिक शब्द सामान्य शब्दों से विशिष्ट होते हैं। इनके निर्माण संबंधी अनेक विचारधाराएँ प्रचलित हैं। पारिभाषिक शब्दावली निर्माण संबंधी शुद्धतावादी विचारधारा को 'पुनरुद्धारवादी', 'राष्ट्रीयवादी', 'संस्कृतवादी', 'प्राचीनतावादी' विचारधारा आदि अनेक नामों से अभिहित किया जाता है। इस वर्ग के लोग भारतीय भाषाओं की समस्त पारिभाषिक शब्दावली संस्कृत भाषा से लेने के पक्ष में हैं। इस विचारधारा में विश्वास रखनेवाले लोगों का मानना है कि 'संस्कृत में शब्द निर्माण की अपार शक्ति है।' इसलिए किन्हीं अन्य स्रोतों से शब्द-ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं है। यह पुनरुद्धारवादी संप्रदाय इसलिए कहलाता है, क्योंकि इस विचार-दृष्टि वालों ने भारतीय शास्त्रों में उपलब्ध शब्दों का उद्धार किया।

हिंदुस्तानीवादी विचारधारा के लोग भाषा में प्रयोगवाद के पक्षधर थे। दैनिक प्रयोग के हिंदी-उर्दू के संयुक्त रूप 'हिंदुस्तानी भाषा' के शब्दों के प्रयोग में इनका विश्वास था। वे हिंदुस्तानी के माध्यम से देश की सामासिक संस्कृति का प्रचार करना चाहते थे। यह प्रयोगवादी विचारधारा के नाम से भी जाना जाता है। इस विचार दृष्टि के पोषकों की मान्यता थी कि हमारी मिश्रित संस्कृति के अनुरूप शब्दावली भी मिश्रित होनी चाहिए। हिंदुस्तानी विचारधारा के प्रवर्तक थे डॉ. जाफर हसन और पंडित सुंदरलाल।

डॉ. रघुवीर की संस्कृत आधारित 'शुद्धतावादी विचारधारा' और शब्दावली के देशीकरण के रूप में हिंदुस्तानी विचारधारा के साथ-साथ धीरे-धीरे एक अन्य विचारधारा भी विकसित हुई। इस विचारधारा के पोषक अन्य भाषाओं से शब्दग्रहण के पक्षधर थे। इस विचारधारा को 'शब्द-ग्रहणवादी', 'आदानवादी' एवं 'अंग्रेज़वादी' विचारधारा की संज्ञा भी प्रदान की जाती है। इस मत के समर्थकों में अधिकांशतः वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर, वकील और सरकारी अधिकारी थे। वे अंग्रेज़ी तथा अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली ग्रहण करने के पक्षधर थे। अंग्रेज़ी शब्दों के अभ्यस्त होने के कारण ये लोग हिंदी के नए शब्द सीखने से बचना चाहते थे। इनका यह मानना रहा है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास पाश्चात्य देशों की देन है। इसलिए जिन संकल्पनाओं और वस्तुओं के लिए हिंदी में शब्द नहीं हैं, उनके लिए अंग्रेज़ी तथा अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दों को ज्यों का त्यों ले लिया जाए। इन लोगों का मानना था कि अंग्रेज़ी एवं अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली का प्रचार विश्व में सर्वाधिक होने के कारण हमारे शास्त्रवेत्ताओं को विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित साहित्य को समझने में सरलता होगी।

पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में जहाँ शुद्धतावादी, हिंदुस्तानीवादी और अंतर्राष्ट्रीयवादी विचार दृष्टियाँ प्रभावी थीं, वहीं लोकवादी दृष्टि भी देखने को मिलती है। इस प्रवृत्ति को स्वभाषावादी विचारधारा के नाम से भी जाना जाता है। इस विचार दृष्टि के समर्थकों की आधार-भूमि जन-प्रयोग से शब्द ग्रहण करने अथवा जन-प्रचलित शब्दों के योग से शब्द निर्माण की रही है। पारिभाषिक शब्दों के निर्माण संबंधी इस दृष्टि को हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुकूलन कहा जा सकता है। 'Infiltrator' के लिए 'घुसपैठिया'

शब्द एवं 'Defector' के लिए 'दलबदलू' अथवा 'आयाराम गयाराम' शब्द का प्रयोग करना जन-प्रयोग से शब्द ग्रहण करने की लोकवादी विचार-दृष्टि का परिचायक है।

पारिभाषिक शब्दावली के संबंध में 'शुद्धतावादी दृष्टि' से निर्मित शब्दावली की दुरुहता, हिन्दुस्तानी विचारधारा द्वारा शब्दावली का देशीकरण, लोकवादी विचारधारा द्वारा शब्द निर्माण की सीमित संभावनाएँ एवं अंतर्राष्ट्रीयतावादी विचारधारा की अपनी सीमाएँ अतिवादिता के द्योतक हैं। इस कारण पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में अराजकता की स्थिति का पैदा होना स्वाभाविक था। वास्तव में किसी भी भाषा-समाज को अति शुद्धतावादी नियमों अथवा विदेशी शब्दों से अभिभूत करना स्वीकार्य नहीं है। ऐसे में शब्द-रचना की कठिन प्रक्रियाओं को छोड़ने एवं विभिन्न विचारधाराओं के सही बिंदुओं के चयन से समन्वय स्थल पर पहुँचने का मार्ग ही शेष रह जाता है। समन्वित दृष्टिकोण इस बात में निहित है कि 'भारत की सामाजिक, साहित्यिक, शैक्षणिक और आर्थिक आवश्यकताओं का सही निर्धारण किया जाए। भाषा के विकास और उसकी वर्तमान अवस्था को सामने रखते हुए उसे संपन्न बनाने के लिए प्रयुक्त विविध साधनों का उचित मूल्यांकन किया जाए। उनमें निहित श्रेष्ठ तत्वों को लेकर एक सर्वमान्य समन्वित विधा तैयार की जाए। यह एक वास्तविकता है। एक क्रिया है। उसका एक व्यावहारिक प्रयोजन होता है। अतएव, उसकी आवश्यकता का मूल्यांकन जन-समाज की गतिविधि और जीवन-क्रम के आधार पर करना आवश्यक है। तकनीकी शब्द ग्रहण एवं नव-शब्द निर्माण में इसी संतुलित दृष्टिकोण को अपनाकर पारिभाषिक शब्दावली को समृद्ध किया जा सकता है।

Sreelayam, Opposite of ICICI Bank, Attingal Post, Pin - 695101

लघुकथा

एक शब्द

- ज्योति स्पर्श

एक शब्द जिसे बोलने की प्रैक्टिस वह न जाने कितने दिन से कर रही थी। आज उसी शब्द को कह कर अपने हिस्से की जिंदगी जी लेना चाहती है। उसे लगता है कि यही सही मौका भी है। उस शब्द को वह बार-बार होंठों से बुदबुदाती रही है, मानो रियाज कर रही है। सुबह 5 बजे तक जागकर काटी जिंदगी अब 10 बजे तक सोकर पुनः उठने के कर्म में मशगूल होने लगी है। दो जिंदगियाँ रात को जग बतियाए को बाध्य हैं। रात की कालिमा का आगाज होते ही सिया का फोन अनिकेत के पास आता है। थोड़ी-सी खामोशी शब्दों पर भारी पड़ जाती है। सिर्फ एक स्वीकारोक्ति और दोनों चल पड़ते हैं काठमंडु के मंदिर के पुजारी के सामने हाथ में वरमाला लिए।

सिया अपने हाथ बढ़ाती है अनिकेत के गले में वरमाला डालने के लिए। अनिकेत भी वही सब दोहराता है, और फिर एक छोटी-सी डिब्बिया के साथ धीरे से वह सिया की ओर चुटकी में सुर्ख सिंदूर लिए बोल देता है वह शब्द जिसके कारण हर रात बातें कम और खामोशी ज्यादा होती थी। इस दरमियान अनिकेत के होठों पर एक खामोशी है, एक संपूर्ण खामोशी। आँखों में शरारत लिए सिया कहती है- दो चुटकी सिंदूर की कीमत तुम क्या जानो अनिकेत। अनिकेत एकदम निःशब्द।

302, B-Block, Hari Radha Apartment, Sardar Patel Path, Boring Road, Patna - 800013

रास्ता परिमेड की ओर

मूल : मलयालम कहानी : टी. पद्मनाभन

अनु : वी. के. बालकृष्णन नायर

कल शाम को घर पर कुछ सोचते हुए बैठा हुआ था। तब एक फोन आया। पहले मैं समझ नहीं पाया कि कौन है। पर उस शब्द में प्यार और आदर भरा हुआ था। तो मैं बोल ही नहीं सका कि मैं आपको पहचान नहीं पाया। बुलानेवाले ने कहा, जैसे मेरी घबराहट समझकर ही सही- जी, मैं आपका पुराना मार्टिन हूँ। अम्बलमेड कॉलेनी में आपके लिए रोज़ सबेरे दूध ले आने वाला..... जी, आप भूल गए? आपका नाम टी. वी. में और समाचार पत्रों में देखते समय सोचा करता था कि आपको फोन करूँ, बुलाऊँ, पर आलसीपन लेकिन समाचार पत्रों से पता चला कि आज ही आपकी 90 वीं वर्षगाँठ है। तो निश्चय किया कि ज़रूर आपको फोन करना है, ज़रूर बात करनी है... अभी.... इसी वक़्त।

खुशी के कारण मैं कुछ बोल नहीं पाया।

फिर - कहा- 'मार्टिन' धन्यवाद! मुझे याद आया! बहुत-बहुत धन्यवाद।

मार्टिन ने कहा- जी, ऐसा न कहें। मुझे पाप लगेगा। धन्यवाद तो मुझे कहना चाहिए। आपने उस समय जो मेरे लिए किया... आपको याद किए बिना कैसे रहूँ मैं?

पैंतीस साल पहले उस दिन भी मैं चार बजे घर का ताला लगाकर बाहर आया। घर के सामने एक सौ पचास एकड़ का एक सुंदर तालाब जो बरसात और गर्मी में पानी से भरा रहता है। किनारे से सड़क जाती है। तीन बार तालाब के चारों ओर दौड़कर आखिर पाँच बजे तक घर पहुँचा हूँ।

सबेरे घर पर जो समाचार पत्र आता है उसे पढ़ते हुए बैठा...

उस समय मेरी पत्नी ने आकर बताया- 'दूधवाला नहीं आया।'

मैं केवल 'ऊँ' कहकर उत्तर दिया। तो पत्नी ने दुबारा आकर कहा, क्या मेरा कहना सुनते हो कि नहीं?

समय तो हो गया- "तो आज काली चाय पीकर जाना पड़ेगा।"

'जैसा संभव हो।'

'काली चाय' पीकर पत्नी विश्वविद्यालय-दफ़्तर चली गई। मुझे ऐसी पाबंदी तो नहीं थी। चाय, कॉफी ही पीना..... के. वी. नंबूतिरी का 'दाहशमनी' डालकर गरम करके पानी पीकर मैं दफ़्तर चला गया।

दूसरे दिन काली चाय पीकर दफ़्तर जाने की नौबत नहीं आई।

मार्टिन समय से पहले दूध लेकर आ गया। उसके बर्ताव में हर दिन सा जोश नहीं था। वह एकदम परेशान था।

क्या हुआ? पूछने पर मार्टिन बोलने लगा - कल मुझे एक धोखा हुआ जी। दूध की कुछ कूपन पुस्तिकाएँ गायब हो गईं। मैं आलुवा से आ रहा था। रास्ते में कहीं गिर गई होंगी! नहीं तो कॉलेनी में कहीं रखकर भूल गया होगा। उनकी खोज में कल इधर-उधर घूमना पड़ा। इसलिए कल आ न सका जी। मार्टिन रुआँसू हो गया। मैंने तब पूछा - इसके पहले ऐसा कभी हुआ था?

‘नहीं जी!’ यह तो पहला अनुभव है, जी मेरा वेतन काट दो जी, कहकर वह रोने लगा। मैंने कहा - ठहरो। मैं अंदर गया। एक पोटली लेकर बाहर आया और उसे मार्टिन को दिया और कहा - लो!

‘यही है?’

‘जी, यह’

मैं हँसते हुए कहा - कल कॉलेनी के बीच सड़क से मिली। मैंने इसे देखा, तो समझ गया। सोचा कि सबेरे दूध लेते समय दे दूँगा पर, ‘पर मार्टिन, कल तो तू नहीं आया!’ मार्टिन कुछ बोल नहीं सका। वह पहले यों ही कुछ देर तक खड़े देखता रह गया! फिर

उसकी आवाज सुनकर पुरानी बातें याद आने लगीं।

पहले कुछ बोल न पाने पर भी बाद में पूरी बातें मार्टिन ने ही की थी। ईश्वर के बारे में, सत्य के बारे में, पाप के बारे में - बहुत कुछ।

बात को आगे बढ़ाते हुए मैंने मार्टिन से पूछा - अरे अब भी पुराने काम करते हुए आलुवा में ही हैं?

मार्टिन ने तुरंत कहा- ‘नहीं जी नहीं। वह तो पहले ही छोड़ दिया था। मुझसे ज्यादा, मेरे बच्चों को उसे छोड़ने की ज़रूरत थी। बाप को यह काम नहीं चाहिए- बेटों ने बताया। एक दिन सारी चीज़ें लेकर हम परिमेड आए। दो-एक एकड़ ज़मीन खरीदी। अच्छी खेती है। दो गायें भी खरीदीं। एक छोटा घर भी है। सब के लिए बेटों ने पूरी मदद की। मैं अकेला कैसे कर सकता जी? अब उम्र भी ढलने लगी। पहले जैसा काम भी करना मुश्किल है। तीन सहायक लोग भी हैं। बहुत अच्छे हैं।

जी, आप जब कभी परिमेड आए हैं? बहुत अच्छी जगह है। यहाँ, जो हमारे आस-पास आए हुए हैं सब के सब अच्छे और सच्चे लोग हैं। जी! आप कई जगह जाते हैं न! परिमेड भी ज़रूर आइएगा। मैं अभी से न्योता देता हूँ। ओणम के दिनों में या इस महीने किसी दिन...

आऊँगा रे! ज़रूर आऊँगा। ज़रूर। मेरी पक्की बात सुनने के बाद ही मार्टिन ने अपनी बात समाप्त की।

मैं सोचने लगा परिमेड के बारे में। धीरे-धीरे मैं उसमें लीन हो गया। भोजन तैयार करनेवाला रामचंद्रन के आने की खबर भी मुझे नहीं रही। जब उसने ज़ोर से पूछा, तो मेरी तंद्रा टूटी।

मैंने झट से उससे पूछा - अरे, तुम परिमेड गए हो?

जी, मैं नहीं गया।

मैं भी नहीं गया... तो ज़रूर जाना है।

रामचंद्रन ने मुझे शंका की दृष्टि से देखा और पूछा- क्या परिमेड का रास्ता पता है?

रास्ता! मैं हँस पड़ा। रास्ता पूछ-पूछकर हम जा सकते हैं। ऐसे ही हम कितनी जगहों की यात्रा की है!

रामचंद्रन ने आगे कुछ नहीं कहा।

फिर मैं परिमेड में क्रिसमस मार्टिन और उसके बेटे उणि... ईसा मसीह..... घास की झोंपड़ी... कैरोल गीत....

86 - Jyothis, Kuthiravattam post - 673016 (Kerala)

सरस्वती का प्रकाशन

- राहुल सांकृत्यायन

बीसवीं सदी के आरंभ में 'सरस्वती' का प्रकाशन हिंदी के लिए एक असाधारण घटना थी, जिसका पता उस समय नहीं लगा, पर समय के साथ स्पष्ट हो गया। सरस्वती का नाम पहले पहल मैंने आजमगढ़ जिले के निजामाबाद करबे में सुना। निजामाबाद कस्बा वही है, जहाँ पंडित अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' पैदा हुए, और वहाँ के तहसीली (मिडिल स्कूल) के प्रधानाध्यापक रहे। यह ख्याल नहीं कि नाम के साथ सरस्वती का वहाँ दर्शन भी मिला। सरस्वती का महात्म्य स्कूल से निकलने के बाद मालूम हुआ। 1910 ई. में बनारस में पढ़ते समय किसी के पास सरस्वती देखी और माँगकर उसे पढ़ा भी। मालूम नहीं उसका कितना अंश मुझे समझ में आता था। मैं मूलतः उर्दू का विद्यार्थी था। हिंदी लोगों के कहे अनुसार बिना वर्णमाला सीखे अपने आप ही आ गई। और मैं गाँव में लोगों की चिड़ियाँ हिंदी में लिखने लगा था।

हिंदी अंग्रेजी सरकार की दृष्टि में एक उपेक्षित भाषा थी। सरकारी नौकरियों के लिए उर्दू पढ़ना अनिवार्य था। सरकारी कागज पत्र अधिकांश उर्दू में हुआ करते थे। इसी पक्षपात के कारण मुझे उर्दू पढ़ाई गई। बनारस में संस्कृत पढ़ने लगा था। उर्दू के साथ अगर संस्कृत भी पढ़े, तो हिंदी अपनी भाषा हो जाती है। दो एक बरस बाद मैं बनारस छोड़कर बिहार के एक मठ में साधु हो गया। उस समय मैंने पहिला काम यह किया कि सरस्वती का स्थायी ग्राहक बन गया। इसी से मालूम होगा कि हिंदी के विद्यार्थी के लिए सरस्वती क्या स्थान रखती थी। उसके बाद शायद ही कभी सरस्वती से मैं वंचित होता रहा - देश हो या विदेश। आरंभ में मुझे यह मालूम नहीं था कि सरस्वती के संपादक पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी उसके प्राण हैं। इंडियन प्रेस की कितनी ही पुस्तकें पाठ्य पुस्तकों में लगी हुई थी, इसलिए हिंदी के हर एक स्कूल का विद्यार्थी इंडियन प्रेस को जानता था। 'सरस्वती' इंडियन प्रेस से छपती थी। उसका कागज, उसकी छपाई, उसके चित्र आदि सभी हिंदी के लिए आदर्श थे। उसके लेख भी आदर्श होते थे, यह कुछ दिनों बाद मालूम हुआ। और यह तो बहुत पीछे मालूम हुआ कि गद्य-पद्य लेखों को संवारने में द्विवेदी जी को काफी मेहनत करनी पड़ती थी। भारत की सबसे अधिक जनता की भाषा की यह मासिक पत्रिका इतनी सुंदर रूप में निकलती थी कि जिसके लिए हिंदीवालों को अभिमान हो सकता था। 'सरस्वती' ने अपना जैसा मान स्थापित किया था, उसके संपादक ने भी वैसा ही उच्च मान स्थापित किया था। नहीं तो हिंदी से बंगला और कुछ दूसरी भाषाएँ इस क्षेत्र में जरूर आगे रहतीं।

'सरस्वती' हिंदी साहित्य के सारे अंगों का प्रतिनिधित्व करती थी। गद्य में कहानियाँ, निबंध, यात्राएँ आदि सभी होते थे। पद्य में स्फुट कविताएँ ही हो सकती थीं क्योंकि विस्तृत काव्य को कई अंकों में देने पर वह उतना रुचिकर न होता। मालूम ही है कि हिंदी मातृभाषा तो हम में बहुत थोड़े से लोगों की है। मातृभाषाएँ लोगों की मैथिली, भोजपुरी, मगही, अवधी, कनौजी, ब्रज, बुंदेली, मालवी, राजस्थानी आदि भाषाएँ हैं। इनमें से कौरवी को छोड़कर बाकी सभी हिंदी से काफी दूर हैं। इस कारण हिंदी व्याकरण शुद्ध

लिखना बहुतों के लिए बहुत कठिन है। इन 22 भाषाओं के बोलने वालों को शुद्ध भाषा लिखने, बोलने, पढ़ने का काम सरस्वती ने काफी सिखाया और सबमें समानता कायम की। 'सरस्वती' का यह काम प्रचार की दृष्टि से ही बड़े महत्व का नहीं था, बल्कि इससे व्यवहार में बहुत लाभ हुआ। सरस्वती युग से पहले यह बात विवादास्पद चली आती थी कि कविता खड़ीबोली (हिंदी) में की जाए या ब्रजभाषा में। गद्य की बोली खड़ीबोली हो, इसे लोगों ने मान लिया था। लेकिन पद्य के लिए खड़ीबोली को स्वीकार कराना सरस्वती और उसके संपादक पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी का काम था। बीसवीं सदी की प्रथम दशब्दी में अब भी उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में लोग ब्रजभाषा में कविता करते थे। उनकी ब्रजभाषा कैसी होती थी, इसे बतलाना कठिन है, क्योंकि भोजपुरी भाषाभाषी ब्रजभाषा को 'इतै', 'उतै' जैसे कुछ शब्दों को छोड़कर अधिक नहीं जानते थे। बहुप्रचलित महाकाव्य 'रामचरितमानस' था, जो अवधी का था, जिसका ज्ञान कुछ अधिक हो सकता था। ब्रजभाषा की कविताएँ बहुत कम प्रचलित थीं। तो भी आग्रह ब्रजभाषा में ही कवित और सवैया कहने का था। 'सरस्वती' ने यह भाव मन में बैठा दिया कि यदि खड़ीबोली में गद्य, कहानी, निबंध लिखे जा सकते हैं और खड़ीबोली में उर्दू वाले अपनी शायरी कर सकते हैं, तो कविता भी उसमें हो सकती है। श्री मैथिलीशरण गुप्त खड़ीबोली के आदि कवियों में हैं। उनको दृढ़ता प्रदान करने वाले द्विवेदी जी थे।

प्रायः चार दशकों तक 'सरस्वती' का संपादन ही द्विवेदी जी ने नहीं किया, बल्कि इस सारे समय में साहित्यिक भाषा निर्माण के काम में द्विवेदी जी ने चतुर माली का काम किया। आगे आने वाली पीढ़ियाँ 'सरस्वती' और द्विवेदी जी के इस निर्माण कार्य को शायद भूल जाएँ। किसी भाषा के बारे में किसी एक व्यक्ति और एक पत्रिका ने उतना काम नहीं किया, जितना हिंदी के बारे में इन दोनों ने किया।

लोक संस्कृति

लोकोक्तियाँ/ अभिव्यक्तियाँ

हिंदी में पौराणिक कथाओं पर आधारित कुछ लोकोक्तियाँ और अभिव्यक्तियाँ भी हैं-

मुँह में राम बगल में छुरी
केशव कहि न जाय का कहिए
लंका में सब बावन हाथ के
रामजी की माया, कहीं धूप कहीं छाया
अपना हाथ जगन्नाथ
राम छोड़ी अयोध्या मन चाहे सो लेय
राम नाम जपना पराया माल अपना
मरे रावन फजीहत हो राम की

महिमा घटी समुद्र की रावन
सूझे न बिटौरा चाँद से राम-राम
अंगद के पाँव
लक्ष्मण रेखा
भीष्म प्रतिज्ञा
शंकर की बारात
इंद्र का अखाड़ा
भगीरथ प्रयत्न

- हिंदी प्रचार समाचार डेस्क

आत्मविश्वास

- आर. जयलक्ष्मी

सुदर्शन बैंक में काम करता था। उसकी पत्नी माला गृहरानी थी। उनकी इकलौती बेटी मीरा 10वीं कक्षा में पढ़ती थी। माला चाहती थी कि बेटी मीरा की पढ़ाई पर सुदर्शन ध्यान दें तो अच्छा होगा। लेकिन सुदर्शन को बैंक काम में मुख्य जिम्मेदारी थी। इसलिए उसने माला को समझाया कि 'डरो मत। स्कूल की टीचर ट्यूशन लेने के लिए तैयार होंगी, उनको बताने से मीरा की पढ़ाई होगी और वह भी काफ़ी अंक पाएगी।'

स्कूल में पूछताछ करने से पता चला कि, टीचर एक विषय के लिए 6000/- रु माँग रहे हैं। घर की स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी। कार लोन, मकान लोन आदि के लिए ज़्यादा खर्च हो रहा था। इसलिए काफ़ी सोच रहे थे। एक दिन सुदर्शन के मित्र भरत रास्ते में मिला और कहा- सुदर्शन मेरा भाई! वेंकट एक टुटोरियल खोलने का प्रयास कर रहा है। उसको कुछ लोन बैंक से मिलेगा तो अच्छा होगा, क्या तुम कुछ मदद कर सकते हो?

सुदर्शन ने पूछा कि वेंकट ने क्या किया है और क्या वह ट्यूशन लेने के लिए तैयार होगा। भरत ने कहा कि वेंकट एम.फिल. पढ़ रहा है और वह 6 महीने में समाप्त होगा। तब सुदर्शन ने बताया- बैंक के नियम के अनुसार, जो लोग शिक्षा पूरी कर चुके हैं वे ही टुटोरियल खोलने के लिए योग्य हैं। और यदि वेंकट सहमत हो तो मीरा और दो तीन सहेलियों को घर आकर ट्यूशन देगा तो आमदनी भी बढ़ेगी। वेंकट की पढ़ाई भी पूरी होगी और बैंक से लोन भी मिलेगा। इस तरह वेंकट ने भी मीरा के घर आकर और दो सहेलियों को पढ़ाना शुरू किया। वेंकट होशियार युवक था। ट्यूशन मीरा के घर में होने लगा।

एक दिन मीरा की सहेलियाँ ट्यूशन नहीं आ सकीं। मीरा अकेली पढ़ने के लिए बैठ गई। सुदर्शन घर में नहीं था और माला रसोईघर में कुछ काम कर रही थी। मीरा और वेंकट अकेले बैठे थे। वेंकट गणित सिखा रहा था। तब अचानक जोर से हवा चलने लगी। आटोमेटिक लॉक से दरवाजा बंद हो चुका। दरवाजा खोलना मुश्किल लगा। वेंकट और मीरा डर गए। खिड़की खोलकर मीरा ने जोर से माँ को बुलाया। चाबी बाहर स्टैंड में थी। माला वे दरवाजा खोला।

मीरा रोने लगी तो माला ने ढाढ़स बंधाया और कहा कि घबराने की बात नहीं। काँपने की भी जरूरत नहीं। छोटी-छोटी बातों को लेकर घबराना अकलमंदी नहीं होती। अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो और आत्मविश्वास बढ़ाओ। जो काम आत्मविश्वास से करोगे उसमें सफलता पाओगी। यही उपलब्धि होगी तुम्हारी। यह सुनकर मीरा ने यह निश्चय किया कि वह आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ेगी। वेंकट ने भी मन लगाकर अपना कर्तव्य निभाया। एम.फिल. की पढ़ाई भी पूरी की और अपने सपने को साकार किया।

F-2, JKB Srivarsha, 34/35, Krishna Street, Madanandhapuram, Mugalivakkam, Chennai - 600125

माँ का आशीर्वाद

डॉ. दिलीप धींग

मैंने शैशवकाल से ही अपनी माता उमरावदेवी धींग को सुबह से लेकर देर रात्रि तक अथक श्रम करते देखा। नित्य सामायिक और विविध पारिवारिक दायित्वों के बीच वे पूर्ण मनोयोग से एक के बाद एक अनेक कार्य करती थीं। घर में गाय-भैंस होती थीं, उनका बहुत सारा काम होता था। साथ ही माँ घर पर ही सिलाई का कार्य भी करती थीं। माँ के ये कार्य हमारे परिवार का आर्थिक संबल बने हुए थे। माँ के कार्यों में मैं हाथ बँटाता था। मशीन चलाते-चलाते यदि धागा टूट जाता तो मैं तुरंत सुई में धागा पिरो देता था। मशीन चलाते-चलाते माँ के हाथ थक जाते तो मशीन का हत्था मैं चला देता था। धीरे-धीरे मैं कई तरह के सिलाई कार्य भी सीख गया था। उन कार्यों का अलग ही मजा था।

बात उस समय की है, जब मेरी उम्र कोई 12-13 वर्ष की रही होगी। मैं आठवीं में पढ़ता था। हमारे घर पर दिन भर सिलाई के लिए महिला ग्राहकों का आना-जाना लगा रहता था क्योंकि महिलाओं व बच्चों के परिधान सिलाई का कार्य विशेष रहता था। माँ कपड़ों की सिलाई कर लेती तो उनके काज-बटन करने होते थे। यह कार्य बड़ा समय-साध्य हुआ करता था और माँ के पास समय का अभाव रहता था। हम भाई-बहिन काज-बटन के कार्य में माँ का सहयोग करते थे। यह जिम्मेदारी मुझे अधिक निभानी होती थी, परीक्षा के दिन भी। फिर भी दिन का अधिकांश समय पढ़ने की बजाय माँ के सहयोग में व्यतीत हो जाता था। माँ उनकी विवशता और मेरी कठिनाई अच्छी तरह समझती थीं। निश्चित ही माँ मेरी अच्छी पढ़ाई और अच्छा परीक्षा फल चाहती थीं। फिर भी मुझसे कार्य में सहयोग का आग्रह करती थीं और कहती थीं, 'बेटा! इतना सा और कर ले! तेरी पढ़ाई अच्छी होगी, तू बहुत अच्छा पास होगा।'

मैं दिन में माँ के कार्यों में हाथ बँटाता और रात को पढ़ाई करता। इस तरह परीक्षा के दिन पूरे हुए और परिणाम के दिन आ गए। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बम्बोरा (उदयपुर, राजस्थान) का खुला प्रांगण शैक्षणिक सत्र 1982-83 के विद्यार्थियों से खचाखच भरा था। सभी परीक्षा-परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरा नाम पुकारा गया। मैं खड़ा हुआ। प्रधानाध्यापक महोदय ने मुझे दो बार बधाइयाँ दीं। पहली बधाई यह कि मैं पिछली कक्षाओं की तरह उस वर्ष आठवीं में भी प्रथम श्रेणी के साथ अव्वल रहा। इस खबर पर तालियों की गड़गड़ाहट के साथ पूरा वातावरण गूँज उठा। दूसरी बधाई मेरे स्कूल टॉप करने की थी। इस घोषणा पर तालियों की गड़गड़ाहट और तेज हुई, और देर तक होती रही। उस गड़गड़ाहट में मुझे माँ के वे आशीर्वाद भरे शब्द याद आ रहे थे- 'तू बहुत अच्छा पास होगा।' मुझे आगे मंच पर बुलाया गया। मैंने सभी गुरुजनों के चरण छुए। स्कूल से रवाना होकर मैं अपनी अंक तालिका के साथ घर पहुँचा। सबसे पहले माँ के चरणों में धोक लगा। मेरा सर्वोत्तम परिणाम जानकर माँ का हृदय खिल उठा। परिवार में खुशियाँ छा गईं।

7, Ayya Mudali Street, 1st Floor, Sowcarpet, Chennai - 600001

सभ्यता का रहस्य

- एच. कांतिमति

'सभ्यता का रहस्य' शीर्षक कहानी के लेखक हैं प्रेमचंद। उन्हें कथा-सम्राट भी कहा जाता है। उपन्यास और कहानी विधा को एक प्रौढ़ावस्था में पहुँचाने वाले कथाकार हैं प्रेमचंद। उन्होंने कथासाहित्य को तिलिस्म और एय्यारी के चंगुल से निकालकर समाज से जोड़ा। उनका मूल नाम धनपत राय था। प्रेमचंद उनका साहित्यिक नाम है।

कथावस्तु : लेखक के मन में यह प्रश्न उठता है कि सभ्य कौन है? असभ्य कौन है? इन प्रश्नों का उत्तर 'सभ्यता का रहस्य' शीर्षक कहानी में कहा गया है। इस कहानी में प्रेमचंद ने समाज में व्याप्त पाखंड पर तीखा कटाक्ष किया है। तथाकथित सफेदपोश और पाखंडी लोग अपने आचरण को ही सभ्य मानते हैं। ये लोग अपने गलत कामों पर भी परदा डाल देते हैं और समाज में सभ्य बनकर अपनी पैठ जमाते हैं। जब तक चोरी नहीं पकड़ी जाती तब तक सभ्य कहे जाएँगे। जैसे ही चोरी पकड़ी गई तो उसी क्षण असभ्य बन जाएँगे।

रतनकिशोर इस कहानी का नायक है। वे देखने में अत्यंत सभ्य दिखाई पड़ते थे। वे बहुत ही उदार और शिक्षित थे। वे रिश्तत तो नहीं लेते मगर दौरे पर जाकर यात्रा-भत्ते के रूप में धन कमाते हैं। दमड़ी अपढ़ था। उसके पास कुछ ज़मीन थी। मगर परिवार के पोषण के लिए कमाई पर्याप्त नहीं थी। इसलिए वह रतनकिशोर के यहाँ नौकरी करता था। एक रात दमड़ी काम पर नहीं आया तो रतनकिशोर ने दो रुपये जुर्माना लगा दिया। दमड़ी के पास दो बैल भी थे। किसानों के लिए यह गौरव का विषय था। इसलिए उसकी रक्षा भी करता था। दमड़ी ने अपने बैलों के लिए पासवाले के खेत से चारा चुराया। जब रतनकिशोर के पास यह केस आया तो वह उसे सख्त सजा सुनाता है।

शहर में एक रईस भी था। वह खून के मामले में फँस गया। केस रतनकिशोर के पास आई। रईस ने अपनी पत्नी को रतनकिशोर की पत्नी के पास भेजा। रतनकिशोर की पत्नी रिश्तत लेकर अपने पति से कहती है। पहले वह उसे डाँटता है पर रुपये वापस देने को नहीं कहता। वह रईस को रिहा करवा देता है। लेखक कहते हैं कि आप बुरे काम करके उन पर परदा डालना जानते हैं तो आप सभ्य हैं। अगर परदा नहीं डाल सकते तो आप असभ्य हैं। यही सभ्यता का रहस्य है।

S-10, Jayakrishna Apartments, Old Township Road, Ambathur, Chennai - 600053

अनूद्यता की संकल्पना पाठकेंद्रित है। पाठ, संप्रेषण की इकाई है। पाठ की आकार-सीमा का निर्धारण संप्रेष्य की अन्विति से होता है। दूसरे, पाठ को संप्रेषण की इकाई कहने का निहितार्थ है कि पाठनिष्पादक भाषाप्रयोग पाठ के अधीन है। भाषा-संरचना की भाषा विश्लेषणात्मक विविधस्तरीय इकाइयाँ और पैटर्न पाठ के विभिन्न आयामों और बिंदुओं से यथायोग्य रीति से सहसंबंधित है।

- सुरेश कुमार

स्वास्थ्य ही सबसे बड़ी पूँजी है

- राजेंद्र भाटिया

यह सर्वमान्य है कि व्यक्ति का स्वास्थ्य ही उसकी सबसे बड़ी पूँजी है। परन्तु दुर्भाग्य व दुख से कहना पड़ता है कि ज्यादातर लोग जानकर भी नजरअंदाज करते हैं और जीवन में अपने स्वास्थ्य के प्रति उदासीन रहते हुए धन एकत्र करते रहते हैं। इसलिए, जीवन के किसी न किसी मोड़ पर, अपने को हर तरफ से हारा हुआ पाते हैं।

मनुष्य का शरीर भी एक प्रकार की मशीन है। अन्य मशीनों की भाँति, शरीर की भी प्रतिदिन उचित देखभाल करने की आवश्यकता होती है, ताकि शरीर बेहतरीन रहकर, सभी कार्य करने में सक्षम रहे वरना, शरीर भी किसी दिन काम करना बंद कर सकता है एवं व्यक्ति के लिए बड़ी बाधा बनकर, उसकी सभी योजनाओं को बिगाड़कर विफल भी कर सकता है।

कहा जाता है कि सभी प्रकार के सुखों में, अच्छा स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा सुख है। बिना अच्छे स्वास्थ्य के बाकी तमाम सुख बेकार हैं। इस संदर्भ में एक कहानी इस प्रकार है :-

एक व्यक्ति गरीब परिवार में जन्म लेकर, भगवान को कोसने लगा कि भगवान आपने मुझे कुछ भी नहीं दिया। उसके भगवान को बहुत कोसने पर, भगवान प्रकट हुए और उससे पूछा - 'तुम इतने दुखी क्यों हो?'

गरीब व्यक्ति : भगवान आपने मुझे कुछ भी क्यों नहीं दिया?

भगवान : मैंने तुम्हें एक स्वस्थ शरीर दिया है।

गरीब व्यक्ति : बिना धन, इस स्वस्थ शरीर का क्या लाभ?

भगवान : ठीक है, तुम मुझे अपना एक हाथ दे दो। बदले में मुझसे 25 लाख रुपये ले लो।

गरीब व्यक्ति : यह कैसे सम्भव है? मैं यह नहीं कर सकता।

भगवान : फिर तुम मुझे अपने दोनों हाथ दे दो, और मुझसे 50 लाख रुपये ले लो।

गरीब व्यक्ति : यह असम्भव है। मुझे मंजूर नहीं।

भगवान : ठीक है, तो तुम मुझे अपनी एक टाँग दे दो, और बदले में 50 लाख रुपये ले लो।

गरीब व्यक्ति : यह कैसा मुखर्तावाला सौदा है? मैं यह नहीं कर सकता।

भगवान : तो तुम मुझे अपनी दोनों टाँगें दे दो, और एक करोड़ रुपये ले लो।

गरीब व्यक्ति : यह तो बहुत बुरा सौदा है। मैं यह कदापि नहीं कर सकता।

भगवान : देखो! तुम अगर मेरी सभी शतों को मानते, तो तुम्हें डेढ़ करोड़ रुपये मिल सकते थे। फिर भी तुम कहते हो कि मैंने तुम्हें कुछ नहीं दिया।

गरीब व्यक्ति : भगवान, कृपया मुझे माफ करें। मैं अब समझ गया हूँ कि आपके द्वारा दिया गया स्वस्थ शरीर मेरे लिए कितना मूल्यवान है। मैं अब से इस शरीर का सदुपयोग करते हुए धन कमाऊंगा।

इसके बाद, भगवान अंतरधान हो गए व उस गरीब व्यक्ति ने अपनी मेहनत व लगन से काम कर, जीवन में बहुत धन कमाया। सभी व्यक्तियों को एक दिन में 24 घंटे बराबर-बराबर मिलते हैं पर हममें से कितने व्यक्ति हैं जो शरीर को स्वस्थ बनाए रखने में, एक घंटा भी खर्च करते हैं? बहुत कम। यही कारण है कि अधिकतर लोग, विशाल धन एकत्र करने के बाद भी, प्रायः बीमार व दुखी रहते हैं एवं अपने शरीर को स्वस्थ रखने की लम्बी लड़ाई करते रहते हैं, जो कि बहुत मुश्किल होता है।

एक प्रसिद्ध वकील ने कहा है, 'व्यक्ति अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में, अपने स्वास्थ्य का नजरअंदाज करते हुए, धन कमाने में लगे रहता है, और जीवन के अंतिम वर्षों में उसी धन को खर्च करता है, स्वास्थ्य सुधारने में, जो कि सम्भव नहीं होता। कितना मूर्ख है व्यक्ति। अतः स्वास्थ्य ही सबसे बड़ी पूँजी है।' इसलिए, हम सभी को अपने स्वास्थ्य को सही रखने हेतु उचित ध्यान व प्राथमिकता देनी चाहिए। अपने आपको स्वस्थ रखने के बहुत से तरीके हैं। पहले तो व्यक्ति को अपने आपको स्वस्थ रखने का दृढ़ निश्चय करना होगा। फिर वह रास्ते अपने आप खोज लेगा। शरीर की रचना, उसके विभिन्न अंगों के कार्य, भोजन व इसके पोषण तत्व, समय समय पर जरूरी मेडिकल टेस्ट आदि की उचित जानकारी हासिल कर, व उसके अनुसार जीने से व्यक्ति अपने स्वास्थ्य को बखूबी ठीक रख सकता है। सभी को ज्ञात है कि एक स्वस्थ शरीर में, स्वस्थ मस्तिष्क रहता है। इसलिए, शरीर को स्वस्थ रखकर, व्यक्ति अपने मस्तिष्क को भी बहुत प्रभावशाली व उपयोगी बनाकर, अपने को हमेशा प्रगतिशील व धनी बना सकता है।

इन बातों से यही साबित होता है कि स्वास्थ्य ही वास्तव में जीवन की सबसे बड़ी पूँजी व धरोहर है, और अच्छा स्वास्थ्य रखना काफी हद तक व्यक्ति के ही बस में है।

Plot No. 27, Flat No. 202, Seetha Residency, Ram Street, No.8, Rajapark, Jayapur - 302004

कविता की भाषा के गठन में सबसे अधिक बल इस पर दिया जाता है कि इसमें शब्द का अपव्यय नहीं होना चाहिए और कहीं भी कोई चीज अप्रयोजन या अनावश्यक नहीं होनी चाहिए। इसीलिए जिसे हम कविता का अन्वयार्थ (पैराफ्रेज) कहते हैं वह वस्तुतः अन्वयार्थ न होकर कविता के परस्पर संबद्ध अर्थ का ठीक-ठाक विपर्यय होता है। इस तथाकथित अन्वयार्थ में वह सब कुछ छूट जाता है जो कविता में जुड़ा हुआ है और उससे ऊपर वे दूसरी चीजें आरोपित हो जाती हैं जो कविता की दृष्टि से व्यर्थ हैं।

(विद्यानिवास मिश्र, रीतिविज्ञान, पृ.69-70)

ओ मेरे प्यारे मन!
 क्यों दौड़ रहे हो हर क्षण
 बिना किसी वाहन के
 पहुँच जाते हो विशाल गगन।
 लगातार करते हो भ्रमण
 बिना कोई निश्चित कारण
 इच्छा रखते हो तुम असाधारण
 पूरा न हो तो रह जाते हो मौन।
 तुम कर सकते हो हर बात का अनुमान
 मिटा नहीं सकते अपना अभिमान
 विद्वान बनने का रखते हो अरमान
 अंदाजा है नहीं तुमको अपना परिमाण
 आसानी से बन जाते हो बेईमान
 तुम्हारे भ्रम का है नहीं कोई समाधान

चाहो तो तुम बन सकते हो अतुल्य समान।
 ओ मेरे प्यारे मन
 तुम विचलित हो जाते हो
 मृत्यु को समीप पाकर
 अपनी भावनाओं को वश में नहीं रख सकते हो
 और संतुलन खो जाते हो
 कालचक्र रुकता नहीं किसी के लिए
 फिर भी नहीं जानते हो समय का महत्व
 आलसी बनकर समय नष्ट करते हो
 हर वक्त हवा में पुल बाँधते रहते हो।
 उलझनों में धिरे समय वृथा मत करो
 अपने दुर्गुणों का प्रदर्शन मत करो
 विवेक से अपने कर्मों का पालन करो
 सच्चे और अच्छे इंसान बनकर दिखाओ।

Q.No. 123, Type - IV, North West Moti Bagh, New Delhi - 110021.

सिर राखे सिर जात है, सिर काटे सिर सोय।

जैसे बाती दीप की, कटि उजियारा होय।। (कबीर)

सिर की रक्षा करने से सिर नष्ट होता है और उसे काटने पर सिर शोभित होता है, जैसे कि दीपक की बत्ती काटने पर प्रकाश होता है। कबीर की दृष्टि में भक्ति के लिए भगवत् स्मरण और भगवान की शरणागति, उसके लिए अहेतुक प्रेम और उसके प्रेम में तन्मयता या बिना शर्त के आत्मसमर्पण- ये तीन मुख्य साधन हैं। यहाँ उन्होंने आत्मसमर्पण को भक्ति का आवश्यक अंग स्वीकार किया है। भक्त के हृदय में दीपक के प्रकाश की तरह एक अपूर्व प्रकाश होता है। अपने सिर को समर्पण करनेवाले भक्त का सिर ही बाद में दीपक की बत्ती की तरह अधिक होता है और वह जग को प्रकाश देता रहता है।

वही शब्द सरल है, जो व्यवहार में आ रहा है। इससे कोई बहस नहीं कि वह तुर्की है, या अरबी, या पुर्तगाली। उर्दू और हिंदी में क्यों इतना सौतिया डाह है, मेरी समझ में नहीं आता। - प्रेमचंद

योग और हम

- आर.जे. वैशाली गुप्ता

योग का सामान्य अर्थ है जोड़ना। वस्तुतः किसी के प्रति तन और मन से जुड़ जाना ही योग है। शरीर और आत्मा को एक साथ जोड़ने का नाम है योग। योग के निरंतर अभ्यास से तन और मन प्रफुल्लित रहता है। प्राणायाम शरीर ही नहीं, आत्मा को भी स्वस्थ रखता है। अगर थक गए हों सभी इलाजों से तो योग व प्राणायाम आजमाइए।

जीवन शैली में योग को अपनाकर स्वयं को स्वस्थ बनाइए। स्वास्थ्य के लिए योग अपनाइए और रोग भगाइए। कार्य-शैली को सँवारकर कार्यक्षमता को बढ़ाइए। जीवन को सुधारने में भी योग महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। योग एवं प्राणायाम में छिपे हुए हैं स्वास्थ्य के सभी सार। यदि खुशियाँ चाहते हैं तो कैसे कर सकते हैं इनसे इनकार!

कुल मिलाकर कहें तो योग मनुष्य जीवन को स्वस्थ, सुंदर व उद्देश्यपूर्ण बनाता है। हे मानव! अपने जीवन में नित्य करो योग तथा अपने जीवन को बनाओ निरोग। हर कोई हो सकता है, छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब पर बीमारी के लिए कोई भेदभाव नहीं।

122A, Rostrover Garden, Railway Officer's Colony, Teynampet, Chennai - 600018

बुझो तो जानो

- (1) सूअर की चर्बी वाले कारतूस के प्रयोग का विरोध करने वाला _____
- (2) इंकलाब जिंदाबाद का नारा देनेवाला _____
- (3) सत्यमेव जयते कहने वाला _____
- (4) अहिंसा के पुजारी _____
- (5) स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधान मंत्री _____
- (6) तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा _____
- (7) भारत के प्रथम क्रांतिकारी _____
- (8) स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर ही रहूँगा _____

(उत्तर के लिए देखें पृष्ठ 40)

संप्रेषण : समस्या और समाधान

- विद्यानिवास मिश्र

भाषा के अध्ययन में संप्रेषण नया आयाम नहीं है, चाहे प्राचीन भारत के विचारक रहे हों चाहे पश्चिम के विचारक रहे हों, सब ने भाषा को विचारों के संप्रेषण और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम माना है, परंतु सामाजिक संबंधों की जटिलता तथा तकनीकी विकास के दबाव में संप्रेषण के तकनीकीकरण भाषा-व्यापार में संप्रेषण को कुछ अधिक महत्व दिया जाने लगा है। आमने-सामने की बातचीत में, जिसमें व्यक्ति से व्यक्ति की परस्पर संसक्तता है, उसमें प्रभावी संप्रेषण अकेली भाषा से नहीं होता, कभी इशारों से, कभी चेष्टाओं से, कभी कुछ अव्याकुल ध्वनियों से (जैसे हंसी, कराह, रुदन, रस) भी सहायता लेनी पड़ती है। कभी-कभी आँखों-आँखों के सहारे ही संदेश न केवल पहुँच जाता है, संदेश का उत्तर भी मिल जाता है।

संकेतों का उपयोग भाषा के विकल्प के रूप में मनुष्य ने आदिम युग से ही शुरू कर दिया, जब एक पहाड़ पर आग जलाकर दूसरी पहाड़ी तक संदेश प्रेषित किया जाता था, विशेष संकट की सूचना या विशेष हर्षप्रद घटना की सूचना आग के विविध प्रतिरूपों से दी जाती थी। पर आग का आविष्कार भी भाषा के आविष्कार का अनुवर्ती है। क्योंकि आग और भाषा दोनों समूह-जीवन और समूह अन्तर्वर्तन की अपेक्षा करते हैं और समूह में जीना भाषा की और आग की अपेक्षा करता है। भाषा का आविष्कार पहले हुआ, उसके बाद आग का, आग के बिना गुफा के अंधकार में एक दूसरे का चेहरा देखना संभव नहीं था और चेहरे देखे बिना ठीक तरह से संलाप संभव नहीं था। भाषा और आग के आविष्कारक मनुष्य ने आग से भाषा का काम लिया, उसके परिष्कृत चिंतन में भी अग्नि ही देवता का पुरोहित बना, वही देवता और मनुष्य के बीच की कड़ी बना, अग्नि और वाक् दोनों विराट् पुरुष के मुख से उत्पन्न हुए माने गए। दोनों में संयोजन की, सान्निध्य की संभावना पहचानी गई। इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि आग से भाषा का कार्य लिया जाय। धीरे-धीरे रंग बिरंगे झंडों से संकेतप्रेषण का विकास हुआ, फिर सीढ़ियों से, फिर जब दूर संप्रेषण के लिए तार का आविष्कार हुआ तो ठोस संकेतों का विकास हुआ, जिसमें आघात-ध्वनियों को एक प्रतिरूप में बाँधा गया।

ध्वनि-लहरियों को विद्युत-लहरियों में रूपांतरित करने की विधि ज्ञात होने पर दूर तक भाषिक संप्रेषण सुकर हो गया। अब तो भाषा के साथ-साथ भाषा बोलने वाले को भी टेलीफोन करते समय देखना संभव हो गया है। यही नहीं, अनुपस्थिति में भी, यहाँ तक कि मृत्यु के बाद भी व्यक्ति का संदेश संप्रेषण संभव हो गया है। स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी की आवाज़ करोड़ों लोगों तक महीनों से पहुँचाई जा रही है, और उस आवाज़ के पहुँचाने का काम उठाया जा रहा है। मनुष्य ने संप्रेषण के इतने स्तर, इतने प्रकार अब आविष्कृत कर लिए कि भाषा स्वयं संप्रेषण से, विशेष रूप से समूह संचार साधनों द्वारा संप्रेषण से, अभिभूत हो गई है। टेलीविजन ने तो परिवारों में भाषाहीनता की स्थिति उत्पन्न कर दी है, व्यक्ति से व्यक्ति की बातचीत एकतान टेलीविज़न-दर्शन-श्रवण में डूब गई है। अब तकनीक ही विश्वभाषा बन गई है।

(सामार : बहुब्रिही, अंक 2, जनवरी-जून 2014)

**POST GRADUATE AND RESEARCH INSTITUTE
DAKSHINA BHARAT HINDI PRACHAR SABHA, MADRAS**

Declared by Parliament as an Institution of National Importance by Act 14 of 1964

Accredited with 'B+' Grade by NAAC

All B.Ed./M.Ed. Colleges are Recognised by NCTE, SRC, NEW DELHI

ADMISSION NOTIFICATION 2023 – 2024

1. B.Ed. (Hindi Medium) : Two Years :

ELIGIBILITY : (10+2+3 Pattern) Candidates with atleast 50% marks either in the Bachelor's Degree or any other qualification equivalent thereto, are eligible to seek admission as per the NCTE Norms.

2. M.Ed. (Hindi Medium) : Two years : Only at Dharwad, Karnataka

ELIGIBILITY : (10+2+3+2 Pattern) Candidates with 50% marks in Courses like B.A./B.Ed., B.Sc./B.Ed., M.A./B.Ed., M.Sc./B.Ed., B.Ed. (Integrated) Courses. B.El.Edn. with Hindi as one of the subjects are eligible to seek admission as per the NCTE Norms. Relaxation for SC/ST/OBC/PWD and other categories in the percentage of eligibility condition for both B.Ed. and M.Ed. courses shall be as per the State Government rules.

Admission is open in all the **11 B.Ed. Colleges** run by DBHP Sabha in the States : Tamil Nadu, Andhra Pradesh, Karnataka & Kerala. **Colleges at : CHENNAI, HYDERABAD, VIJAYAWADA, VISAKHAPATNAM, BANGALORE, BELGAUM, VIJAYPUR, DHARWAD, MYSORE, ERNAKULAM, NILESHWARAM.**

For Application and Prospectus : Rs. 600/-

Last date for submission of filled up Application : 30-08-2023

Applicants may contact directly to the concerned college.

Principal B.Ed., Chennai : 044-24341824- Extn, 123

Secretary, Andhra Branch : 040-23316865/23314949

Secretary, Karnataka Branch : 0836 – 2747763/2435495

Secretary, Kerala Branch : 0484 – 2377766/2375115

Duly filled-in application form shall be submitted to the concerned college Principals in the respective States. *Admission Application forms available on Sabha's website :*

www.dbhpscentral.org

REGISTRAR

श्रद्धांजलि

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा - आंध्रप्रदेश तथा तेलंगाना के व्यवस्थापक समिति के सदस्य (आंध्र सभा की कोषाध्यक्ष जमीला बेगम और प्रबंध निधिपालक शेख मोहम्मद खासिम के सुपुत्र) एस. एम. रफीख का निधन 18 जुलाई, 2023 को हुआ। उनका आकस्मिक निधन उनके परिवार के लिए अपूरणीय क्षति है। हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को चिरशांति और शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।



दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
उच्च परीक्षा समय सारणी – अगस्त, 2023
केरल, तमिलनाडु और चेन्नई शहर के लिए

परीक्षाएँ	केरल/तमिलनाडु/चेन्नई महानगर		
प्रवेशिका पत्र - I	12.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM	
प्रवेशिका पत्र - II	12.08.2023	02.00 PM - 05.00 PM	
प्रवेशिका पत्र - III	13.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM	
विशारद पूर्वार्द्ध पत्र - I	12.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM	
विशारद पूर्वार्द्ध पत्र - II	12.08.2023	02.00 PM - 05.00 PM	
विशारद पूर्वार्द्ध पत्र - III	13.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM	
विशारद उत्तरार्द्ध पत्र - I	12.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM	
विशारद उत्तरार्द्ध पत्र - II	12.08.2023	02.00 PM - 05.00 PM	
मौखिक परीक्षा	13.08.2023	11.00 AM - 01.00 PM	
प्रवीण पूर्वार्द्ध पत्र - I	12.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM	
प्रवीण पूर्वार्द्ध पत्र - II	12.08.2023	02.00 PM - 05.00 PM	
प्रवीण पूर्वार्द्ध पत्र - III	13.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM	
प्रवीण उत्तरार्द्ध पत्र - I	12.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM	
प्रवीण उत्तरार्द्ध पत्र - II	12.08.2023	02.00 PM - 05.00 PM	
प्रवीण उत्तरार्द्ध पत्र - III	13.08.2023	10.00 AM - 01.00 PM	
मौखिक परीक्षा	13.08.2023	02.00 PM - 05.00 PM	

प्रारंभिक परीक्षा समय सारणी – अगस्त, 2023

परीक्षाएँ		केरल	तमिलनाडु	चेन्नई महानगर
प्राथमिक		10.00 AM - 12.30 PM	13.08.2023	20.08.2023
मध्यमा पत्र - I	10.00 AM - 12.30 PM	13.08.2023	20.08.2023	20.08.2023
मध्यमा पत्र - II	02.00 PM - 04.30 PM	13.08.2023	20.08.2023	20.08.2023
राष्ट्रभाषा पत्र - I	10.00 AM - 12.30 PM	13.08.2023	20.08.2023	20.08.2023
राष्ट्रभाषा पत्र - II	02.00 PM - 04.30 PM	13.08.2023	20.08.2023	20.08.2023

- परीक्षा सचिव

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
उच्च परीक्षा समय सारणी – सितम्बर, 2023
आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक प्रांत के लिए

परीक्षाएँ		आन्ध्र प्रदेश एवं तेलंगाणा		कर्नाटक	
प्रवेशिका	पत्र - I	9.09.2023	10.00AM-01.00 PM	09.09.2023	10.00AM-01.00 PM
प्रवेशिका	पत्र - II	9.09.2023	02.00 PM-05.00 PM	09.09.2023	02.00 PM-05.00 PM
प्रवेशिका	पत्र - III	10.09.2023	10.00AM-01.00 PM	10.09.2023	10.00AM-01.00 PM
विशारद पूर्वार्द्ध	पत्र - I	9.09.2023	10.00AM-01.00 PM	09.09.2023	10.00AM-01.00 PM
विशारद पूर्वार्द्ध	पत्र - II	9.09.2023	02.00 PM-05.00 PM	09.09.2023	02.00 PM-05.00 PM
विशारद पूर्वार्द्ध	पत्र - III	10.09.2023	10.00AM-01.00 PM	10.09.2023	10.00AM-01.00 PM
विशारद उत्तरार्द्ध	पत्र - I	9.09.2023	10.00AM-01.00 PM	09.09.2023	10.00AM-01.00 PM
विशारद उत्तरार्द्ध	पत्र - II	9.09.2023	02.00 PM-05.00 PM	09.09.2023	02.00 PM-05.00 PM
मौखिक परीक्षा		10.09.2023	11.00AM-01.00 PM	10.09.2023	11.00AM-01.00 PM
प्रवीण पूर्वार्द्ध	पत्र - I	9.09.2023	10.00AM-01.00 PM	09.09.2023	10.00AM-01.00 PM
प्रवीण पूर्वार्द्ध	पत्र - II	9.09.2023	02.00 PM-05.00 PM	09.09.2023	02.00 PM-05.00 PM
प्रवीण पूर्वार्द्ध	पत्र - III	10.09.2023	10.00AM-01.00 PM	10.09.2023	10.00AM-01.00 PM
प्रवीण उत्तरार्द्ध	पत्र - I	9.09.2023	10.00AM-01.00 PM	09.09.2023	10.00AM-01.00 PM
प्रवीण उत्तरार्द्ध	पत्र - II	9.09.2023	02.00 PM-05.00 PM	09.09.2023	02.00 PM-05.00 PM
प्रवीण उत्तरार्द्ध	पत्र - III	10.09.2023	10.00AM-01.00 PM	10.09.2023	10.00AM-01.00 PM
मौखिक परीक्षा		10.09.2023	02.00 PM-05.00 PM	10.09.2023	02.00 PM-05.00 PM

प्रारंभिक परीक्षा समय सारणी – सितम्बर, 2023

परीक्षाएँ		आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक	
प्राथमिक		10.09.2023	10.00AM-12.30 PM
मध्यमा	पत्र - I	10.09.2023	10.00AM-12.30 PM
मध्यमा	पत्र - II	10.09.2023	02.00 PM-04.30 PM
राष्ट्रभाषा	पत्र - I	10.09.2023	10.00AM-12.30 PM
राष्ट्रभाषा	पत्र - II	10.09.2023	02.00 PM-04.30 PM

- परीक्षा सचिव

पाठ्य पुस्तक-सूची, अगस्त 2023 SYLLABUS FOR AUGUST 2023

प्राथमिक	PRATHMIC
प्राथमिक पाठ्य पुस्तक (प्रश्नोत्तर सहित)	Prathamc Patya Pusthak (with Question & Answer)
मध्यमा	MADHYAMA
मध्यमा पाठ्य पुस्तक (प्रश्नोत्तर सहित)	Madhyama Patya Pusthak (with Question & Answer)
राष्ट्रभाषा	RASHTRABHASHA
राष्ट्रभाषा पाठ्य पुस्तक (प्रश्नोत्तर सहित)	Rashtrabhasha Patya Pusthak (with Question & Answer)
प्रवेशिका	PRAVESHKA

पुराना पाठ्यक्रम

(प्रथम पत्र)

नवीन पद्य चयनिका -1

नवीन गद्य चयनिका -1

(द्वितीय पत्र)

सत्य का स्वर

सत्यमेव जयते (संशोधित)

हिंदी व्याकरण प्रवेशिका-1

(तृतीय पत्र)

भाग - I

हिंदी रत्नाकर

भाग - II

(प्रादेशिक भाषा - तेलुगु)

गद्य मंदारम

काव्य मंजरी (तेलुगु)

(प्रकाशक : द.भा.हि.प्र. सभा (आंध्र), खैरताबाद, हैदराबाद - 4)

(प्रादेशिक भाषा - कन्नड)

कन्नड गद्य भारती भाग-1

कन्नड पद्य भारती भाग-1

(प्रकाशक : द.भा.हि.प्र. सभा (कर्नाटक),

डी.सी. काम्पौण्ड, धारवाड-580 001)

(प्रादेशिक भाषा - मलयालम)

गद्य तरंगावली

पद्य तरंगावली

(प्रकाशक : द.भा.हि.प्र. सभा (केरल),

चित्तूर रोड, एरणाकुलम, कोच्चिन -16)

Old Syllabus

(First Paper)

Naveen Padya Chayanika - 1

Naveen Gadya Chayanika - 1

(Second Paper)

Sathya Ka Swar

Sathyameva Jaythe (Revised)

Hindi Vyakaran Praveshika- 1

(Third Paper)

PART - I

Hindi Ratnakar

PART -II

(Regional Language - Telugu)

Gadya Mandaaram

Kavya Manjari (Telugu)

(Pub.: D.B.H.P.Sabha (Andhra) Khairatabad, Hyderabad-4)

(Regional Language - Kannada)

Kannada Gadya Bharati Part-1

Kannada Padya Bharati Part-1

(Pub.: D.B.H.P. Sabha (Karnataka),

D.C. Compound, Dharwad-580 001)

(Regional Language - Malayalam)

Gadya Tharangavali

Padya Tharangavali

(Pub.:D.B.H.P. Sabha (Kerala),

Chittoor Road, Ernakulam, Cochin-16)

(प्रादेशिक भाषा - तमिल)

तमिल पोझिल-1 (पद्य संग्रह)

तमिल पोझिल-2 (गद्य संग्रह)

(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा (तमिलनाडु),
तेन्नूर हाई रोड, तिरुच्चि-17)

(प्रादेशिक भाषा - मराठी)

श्रेयसी (प्रकाशक : नव साहित्य प्रकाशन, बेलगाँव)

उपेक्षिता चे अंतरंग (प्रकाशक : ज.अ. कुलकर्णी,

कांटीनॅटल प्रकाशन, विजयनगर, पुणे-30)

(Regional Language - Tamil)

Tamil Pozhil-1 (Padya Sangrah)

Tamil Pozhil-2 (Gadya Sangrah)

(Pub.: D.B.H.P. Sabha (Tamil Nadu),
Tennur High Road, Trichy-17)

(Regional Language - Marathi)

Shreyasi (Pub.: Nava Sahitya Pub., Belgaum)

Upekshitha che Antharangha (Pub.: J.A. Kulkarni,

Continental Publication, Vijayanagar, Pune-30)

नया पाठ्यक्रम (प्रवेशिका)

प्रवेशिका पाठ्य पुस्तक-1

(प्रथम पत्र)

प्रवेशिका पाठ्य पुस्तक-2

(द्वितीय पत्र)

प्रवेशिका पाठ्य पुस्तक-3

(तृतीय पत्र)

भाग - II

(प्रादेशिक भाषा - तेलुगु)

प्रवेशिका तेलुगु

(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा (आंध्र), खैरताबाद, हैदराबाद - 4)

(प्रादेशिक भाषा - कन्नड)

कन्नड गद्या भारती भाग-1

कन्नड पद्या भारती भाग-1

(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा (कर्नाटक),

डी.सी. काम्पौण्ड, धारवाड-580 001)

(प्रादेशिक भाषा - मलयालम)

गद्या तरंगावली

पद्या तरंगावली

(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा (केरल),

चित्तूर रोड, एरणाकुलम, कोच्चिन -16)

(प्रादेशिक भाषा - तमिल)

तमिल पोझिल-1 (पद्य संग्रह)

तमिल पोझिल-2 (गद्य संग्रह)

(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा (तमिलनाडु),

तेन्नूर हाई रोड, तिरुच्चि-17)

(प्रादेशिक भाषा - मराठी)

श्रेयसी (प्रकाशक : नव साहित्य प्रकाशन, बेलगाँव)

उपेक्षिता चे अंतरंग (प्रकाशक : ज.अ. कुलकर्णी,

कांटीनॅटल प्रकाशन, विजयनगर, पुणे-30)

New Syllabus (PRAVESHKA)

Praveshika Patya Pustak-1

(First Paper)

Praveshika Patya Pustak-2

(Second Paper)

Praveshika Patya Pustak-3

(Third Paper)

PART - II

(Regional Language - Telugu)

Praveshika Telugu

(Pub.: D.B.H.P.Sabha (Andhra) Khairatabad, Hyderabad-4)

(Regional Language - Kannada)

Kannada Gadya Bharati Part-1

Kannada Padya Bharati Part-1

(Pub.: D.B.H.P. Sabha (Karnataka),

D.C. Compound, Dharwad-580 001)

(Regional Language - Malayalam)

Gadya Tharangavali

Padya Tharangavali

(Pub.:D.B.H.P. Sabha (Kerala),

Chittoor Road, Ernakulam, Cochin-16)

(Regional Language - Tamil)

Tamil Pozhil-1 (Padya Sangrah)

Tamil Pozhil-2 (Gadya Sangrah)

(Pub.: D.B.H.P. Sabha (Tamil Nadu),

Tennur High Road, Trichy-17)

(Regional Language - Marathi)

Shreyasi (Pub.: Nava Sahitya Pub., Belgaum)

Upekshitha che Antharangha (Pub.: J.A. Kulkarni,

Continental Publication, Vijayanagar, Pune-30)

पुराने पाठ्यक्रम और नए पाठ्यक्रम की किताबें दोनों सिर्फ 2023 अगस्त की परीक्षा के लिए मात्र लागू होगा।
फरवरी 2024 से प्रवेशिका का नया पाठ्यक्रम मात्र लागू होगा।

राष्ट्रभाषा विशारद पूर्वार्द्ध**R.B. VISHARAD POORVARDH****(प्रथम पत्र)**

नवीन गद्य चयनिका - 2
निर्मला
नवीन कहानी कलश

(द्वितीय पत्र)

नवीन हिन्दी व्याकरण
व्यावहारिक हिन्दी (पत्र-लेखन)
(हिन्दी संक्षिप्त लेखन)
हिन्दी निबंध संकलन
अनुवाद अभ्यास-5

(तृतीय पत्र)**(प्रादेशिक भाषा - तेलुगु)**

गद्य चंद्रिका
काव्य कुसुमावली

(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, आंध्र)

(प्रादेशिक भाषा - कन्नड)

आधुनिक कन्नड गद्य भारती-2
परिसर मानव इतर कवितेगलु

(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, कर्नाटक)

(प्रादेशिक भाषा - मलयालम)

पतिनोन्नु कथैकळ
पद्य रत्नम (प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, केरल)

(प्रादेशिक भाषा - तमिल)

इलक्किया कनिगल
मलरचेंडु (प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, तमिलनाडु)

(प्रादेशिक भाषा - मराठी)

चांदणवेल (संपादक : गो.प. कुलकर्णी)
गोतावळा (लेखक : आनंद यादव)

(First Paper)

Naveen Gadya Chayanika-2
Nirmala
Naveen Kahani Kalash

(Second Paper)

Naveen Hindi Vyakaran
Vyavaharik Hindi (Letter Drafting)
(Hindi Sankshipta Lekhan)
Hindi Nibandh Sankalan
Anuvad Abhyas-5

(Third Paper)**(Regional Language - Telugu)**

Gadya Chandrika
Kavya Kusumavali

(Pub.: D.B.H.P. Sabha, Andhra)

(Regional Language - Kannada)

Adhunik Kannada Gadya Bharati-2
Parisara Manava Ithara Kavithhegalu
(Pub.: D.B.H.P. Sabha, Karnataka)

(Regional Language - Malayalam)

Pathinonnu Kathaikal
Padya Ratnam (Pub.: D.B.H.P. Sabha, Kerala)

(Regional Language - Tamil)

Ilakkiya Kanigal
Malar Chendu (Pub.: D.B.H.P. Sabha, T.N.)

(Regional Language - Marathi)

Chaandhanavel (Editor: G.P. Kulkarni)
Gothavala (Author: Anand Yadav)

राष्ट्रभाषा विशारद उत्तरार्द्ध**R.B. VISHARAD UTTHARARDH****(प्रथम पत्र)**

नवीन पद्य चयनिका - 2
पंचवटी

(द्वितीय पत्र)

ध्रुवरवामिणी
प्राचीन भारत का इतिहास
सूर्योदय (प्रकाशन-द.भा.हिं.प्र. सभा)

(तृतीय पत्र - मौखिक)

मौखिकी - प्रश्नोत्तरी सहित लिखावट के नमूने

(First Paper)

Naveen Padya Chayanika-2
Panchavati

(Second Paper)

Dhruva Swamini
Praacheen Bharat ka Ithihas
Sooryodaya (Sabha Pub.)

(Third Paper - Viva-voce)

Viva-voce with Likhavat ke Namune

राष्ट्रभाषा प्रवीण पूर्वार्ध**R.B. PRAVEEN POORVARDH****(प्रथम पत्र)**

नवीन गद्य चयनिका - 3

स्कन्दगुप्त (नाटक)

निबंध सौरभ

गबन (प्रेमचंद)

(द्वितीय पत्र)

हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

दक्षिण में हिन्दी प्रचार आंदोलन का इतिहास

दक्षिणी कथाएँ (परिवर्द्धित)

(तृतीय पत्र)**(प्रादेशिक भाषा - तेलुगु)**

व्यास मंजूषा

काव्य माला (प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, आंध्र)

(प्रादेशिक भाषा - कन्नड)

कन्नड कथा भारती

कन्नड पद्य भारती, भाग-3

(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, कर्नाटक)

(प्रादेशिक भाषा - मलयालम)

चिन्ता विष्टयाय सीता

मलयाल माधुर्यम (उपलब्ध : द.भा.हिं.प्र. सभा, केरल)

(प्रादेशिक भाषा - तमिल)

कंबरामायणम - वालिवधैपडलम

कवितैप्पुंगा

(पुरानानूरु और कंब रामायण को छोड़कर)

तमिल इलक्किय वरलारु

(प्रका. : द.भा.हिं.प्र. सभा, तमिलनाडु)

(प्रादेशिक भाषा - मराठी)

गावगुंड (प्रकाशक : लेखक - ग.ल. टोकल)

श्री लेखन वाचन भण्डार 1004, बुधवारपेट, पुणे-2

अभ्र (संपादक : कृ.व. निकुम्ब)

(First Paper)

Naveen Gadya Chayanika-3

Skandagupta (Natak)

Nibandh Sowrabh

Gaban (Premchand)

(Second Paper)

Hindi Sahitya ka Sankshipt Itihas

Dakshin me Hindi Prachar Andolan ka Itihas

Dakshini Kathayen (Revised)

(Third Paper)**(Regional Language - Telugu)**

Vyaas Manjusha

Kavya Mala (Pub.: D.B.H.P. Sabha, Andhra)

(Regional Language - Kannada)

Kannada Katha Bharathi

Kannada Padya Bharati, Part-3

(Pub.: D.B.H.P. Sabha, Karnataka)

(Regional Language - Malayalam)

Chintha Vistayaya Seetha

Malayala Madhuryam (Available: D.B.H.P. Sabha, Kerala)

(Regional Language - Tamil)

Kamba Ramayanam - Valivadhaipadalam

Kavithaipoonga

(Except Puranaanooru and Kamba Ramayan)

Tamil Ilakkiya Varalaaru

(Pub.: D.B.H.P. Sabha, Tamil Nadu)

(Regional Language - Marathi)

Gaavagund (Pub.: Author - G.L. Tokal)

Sri Lekan Vaachan Bandar 1004, Budhvarpet, Pune-2

Abhra (Editor: K.V. Nikumba)

राष्ट्रभाषा प्रवीण उत्तरार्ध**R.B. PRAVEEN UTTARARDH****(प्रथम पत्र)**

रश्मिरथी

नवीन पद्य चयनिका-3

प्राचीन पद्य चयनिका

(द्वितीय पत्र)

काव्य के रूप

काव्य शास्त्र (रस, छंद अलंकार)

1. नौ रसों का सामान्य परिचय।

(First Paper)

Rashmirathi

Naveen Padya Chayanika-3

Pracheen Padya Chayanika

(Second Paper)

Kavya Ke Roop

Kavya Shastra (Ras, Chandh, Alankar)

2. शब्दालंकार : अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति ।
3. अर्थालंकार : उपमा, प्रदीप, रूपक, उत्प्रेक्षा, अपह्नुति, भ्रम, संदेह, दृष्टान्त, उदाहरण, उल्लेख, निदर्शन, अतिशयोक्ति, अर्थान्तरन्यास, अप्रस्तुत प्रशंसा, समासोक्ति, व्याजस्तुति, विरोधाभास ।
4. छन्द : चौपाई, रोला, गीतिका, हरिगीतिका, बरवै, दोहा, सोरठा, उल्लास, कुंडलियाँ, कवित्त, सवैया, छप्पय, दूतविलंबित, वंशस्थ, मालिनी, मंद्राक्रान्ता ।

भाषा विज्ञान प्रवेश

Basha Vignan Pravesh

(तृतीय पत्र)

(Third Paper)

त्रिपथगा (निबंध संग्रह)

Thripathaga (Essays)

प्रयोजनमूलक हिंदी (सभा प्रकाशन)

Prayojan moolak Hindi (Sabha Pub.)

अनुवाद अभ्यास - 6

Anuvad Abhyas-6

(मौखिक)

(Viva-voce)

लिखावट के नमूने

Likhavat ke Namune

आसान परीक्षा पाठ्यक्रम

EASY LANGUAGE SYLLABUS

(प्रवेशिका)

(PRAVESHKA)

तेलुगु : तेलुगु भाषा बोधिनी - I

Telugu : Telugu Bhasha Bodhini-I

कन्नड : कन्नड भाषा बोधिनी - I

Kannada : Kannada Bhasha Bodhini-I

तमिल : तमिल भाषा बोधिनी - I

Tamil : Tamil Bhasha Bodhini-I

मलयालम : मलयालम भाषा बोधिनी - I

Malayalam : Malayalam Bhasha Bodhini-I

मराठी : मराठी भाषा बोधिनी - I

Marathi : Marathi Bhasha Bodhini-I

(रा.भा. विशारद पूर्वार्द्ध)

(R.B. VISHARAD POORVARDH)

तेलुगु : तेलुगु भाषा बोधिनी - II

Telugu : Telugu Bhasha Bodhini-II

कन्नड : कन्नड भाषा बोधिनी - II

Kannada : Kannada Bhasha Bodhini-II

तमिल : तमिल भाषा बोधिनी - II

Tamil : Tamil Bhasha Bodhini-II

मलयालम : मलयालम भाषा बोधिनी - II

Malayalam : Malayalam Bhasha Bodhini-II

मराठी : मराठी भाषा बोधिनी - II

Marathi : Marathi Bhasha Bodhini-II

(रा.भा. प्रवीण पूर्वार्द्ध)

(R.B. PRAVEEN POORVARDH)

तेलुगु : तेलुगु भाषा बोधिनी - III

Telugu : Telugu Bhasha Bodhini-III

कन्नड : कन्नड भाषा बोधिनी - III

Kannada : Kannada Bhasha Bodhini-III

तमिल : तमिल भाषा बोधिनी - III

Tamil : Tamil Bhasha Bodhini-III

मलयालम : मलयालम भाषा बोधिनी - III

Malayalam : Malayalam Bhasha Bodhini-III

मराठी : मराठी भाषा बोधिनी - III

Marathi : Marathi Bhasha Bodhini-III

प्रकाशक : दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

(8) वाङ्मय विभाग

(9) शिक्षा विभाग

(4) महात्मा गांधी

(2) भाषा विभाग

(7) वाङ्मय विभाग

(5) वाङ्मय विभाग

(3) भाषा विभाग

(1) भाषा विभाग

लेखकों और प्रचारकों से अनुरोध

- ✦ 'हिंदी प्रचार समाचार' सभा की शैक्षिक एवं सूचना प्रधान मुख पत्रिका है। इसको उपयोगी, रोचक एवं पठनीय बनाने हेतु सभी लेखकों और प्रचारक बंधुओं का सहयोग प्रार्थित है।
- ✦ प्रकाशनार्थ सामग्री भेजते समय अपने पास एक प्रति अवश्य रख लें। अप्रकाशित व अस्वीकृत सामग्री वापस भेजना संभव नहीं है।
- ✦ कागज की एक ही तरफ सुपाठ्य अक्षरों में लिखकर या टंकित करवाकर भेजें। स्वीकृत रचना संशोधन के उपरांत यथासमय प्रकाशित की जाएगी। प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता (पिन कोड सहित) एवं दूरभाष अवश्य लिखें।
- ✦ परीक्षोपयोगी लेख अनुभवी एवं सक्रिय प्रचारकों से आमंत्रित हैं। विद्यार्थियों को केंद्र में रखकर सरल एवं सुबोध शैली में तैयार करके भेजें। परीक्षा का नाम भी अवश्य लिखें।
- ✦ पुस्तक समीक्षा भेजते समय पुस्तक की एक प्रति अवश्य भेजें।
- ✦ सभी पाठकों से पत्रिका के संबंध में पत्र आमंत्रित हैं।
- ✦ इस पत्रिका के स्तर एवं गुणवत्ता बनाए रखने में आपका सहयोग अपेक्षित है।
- ✦ कृपया रचना भेजने के बाद दूरभाष के माध्यम से बार-बार जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथासमय होगा।
- ✦ कृपया समाज के बीच झूठी छवि फैलाकर सांप्रदायिक सद्भाव को नष्ट करने वाले विवादास्पद मुद्दों वाले लेख न भेजें। उन पर विचार नहीं किया जाएगा।
- ✦ पुनः आपसे निवेदन है कि कोई भी अस्वीकृत रचना वापस नहीं भेजी जाएगी। अतः कृपया उसकी एक प्रति अपने पास अवश्य रख लें।

- संपादक

'YouTube' Channel

प्रचारक बंधुओं के लिए शुभ समाचार

DBHPS, Central Sabha Chennai के नाम से सभा ने अपना 'YouTube' चैनल शुरू किया है। इसमें सभा संबंधी समाचार, परीक्षा समाचार, समारोह, पाठ्य पुस्तक संबंधी संक्षिप्त विवरण होंगे। आप सबसे विनम्र अनुरोध है कि इस चैनल को 'Like' और 'Subscribe' करें।

प्रचारक तथा परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए...

परीक्षा प्रमाण पत्र संबंधी जानकारी तथा अन्य सभी आवश्यक विवरण प्राप्त करने के लिए केंद्र सभा के परीक्षा विभाग का WhatsApp No. 8124333004 उपलब्ध है। - परीक्षा सचिव

प्रचारकों के ध्यानार्थ
सभा द्वारा संचालित ऑनलाइन वर्ग

- (1) बोलचाल हिन्दी - प्रारंभिक 30 वर्ग - 1½ घंटे प्रति वर्ग
सोम, बुध, शुक्र - सायं - 07.00 - 08.30
जनवरी-मार्च; अप्रैल-जून; जुलाई-सितंबर, अक्तूबर-दिसंबर
- (2) बोलचाल हिन्दी - उच्च श्रेणी 30 वर्ग - 1½ घंटे प्रति वर्ग
मंगल, गुरु, शनि - सायं - 07.00 - 08.30
जनवरी-मार्च, अप्रैल-जून, जुलाई-सितंबर, अक्तूबर-दिसंबर
- (3) ऑनलाइन अनुवाद - 10 वर्ग
प्रति रविवार - सायं - 05.00 - 08.00
जनवरी-मार्च, अप्रैल-जून, जुलाई-सितंबर, अक्तूबर-दिसंबर
- विवरण के लिए सभा का वेबसाइट - www.dbhpscentral.org देखें

प्रधान सचिव

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
प्रवेशिका के लिए नया पाठ्यक्रम

प्रचारक बंधुओं को सादर प्रणाम। आपको यह सूचित करते हुए हर्ष का अनुभव कर रहे हैं कि सभा की प्रवेशिका के पाठ्यक्रम के लिए संशोधित एवं परिवर्द्धित पुस्तकें मुद्रित होकर तैयार हो चुकी हैं। पुस्तकों का विवरण इस प्रकार है :-

प्रवेशिका पाठ्य पुस्तक 1, 2, 3 (व्याख्यानमाला सहित)

इन पुस्तकों को प्रचारक एवं विद्यार्थियों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। प्रचारकों से विनम्र निवेदन है कि वे विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तक पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

यह भी सूचित करना चाहते हैं कि पुराना पाठ्यक्रम अगस्त 2023 की परीक्षा तक व्यवहार में रहेगा।

इन नई पाठ्य पुस्तकों के अंत में परीक्षा आवेदन पत्र भी होगा। परीक्षा के लिए इसी आवेदन पत्र का प्रयोग करना अनिवार्य है।

- प्रधान सचिव

Printed by G. Selvarajan General Secretary and published by G. Selvarajan on behalf of Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha (name of owner) G. Selvarajan and printed at Hindi Prachar Press (place of printing) 15-21C Thanikachalam Road, T.Nagar, Chennai-600 017 and published at Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha (place of publication) 15-21C Thanikachalam Road, T.Nagar, Chennai-600 017. Editor G. Selvarajan.

अभिनंदन!



दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
की चयनित कोषाध्यक्ष
श्रीमती एस. गीता
सदस्य, कार्यकारिणी समिति



दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
कार्यालय में 22.06.2023 को
जर्मनी स्थित गांधी सूचना केंद्र के अध्यक्ष
डॉ. क्रिस्टियन वार्टलोफ का स्वागत
करते हुए प्रधान सचिव

केन्द्र सभा, चेन्नै में 'विद्यार्थी मेला' (16.07.2023-प्रारंभिक)



(23.07.2023-उच्च)



August, 2023. Regd. No. TN/CH(C)/321/2021-2023

Licenced to Post without Pre-payment No. TN/PMG(CCR)WPP-432/2021-2023

Posted at Egmore RMS-1; Registrar of Newspaper for India under No. 1089/1957

Date of Publication – First week of every month

Posted at Patrika Channel on Dt. 11 th August, 2023

Hindi Prachar Samachar

REGISTERED NEWSPAPER



To

If not delivered, please return to:

Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha,

15-21, Thanikachalam Road, T. Nagar, P.O., Chennai - 600 017.

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नै - 600 017 को तरफ से जी. सेल्वराजन द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित
 15-21, तणिकाचलम रोड, टी.नगर, चेन्नै - 600 017 में प्रकाशित एवं मुद्रित। संपादक : जी. सेल्वराजन
 Published and Printed by G. Selvarajan on behalf of D.B. Hindi Prachar Sabha, Chennai-600 017.

Published and Printed at 15-21, Thanikachalam Road, T. Nagar, Chennai - 600 017. Editor G.Selvarajan.

